

سب دھرم مذہبوں کی ایکتا۔
सब धर्म-मज़हबों की एकता ।



دلا طواف دلاں کن کہ کعبہ مخفیست
کہ آن خلیل بناموں و این خدا خود ساخت

دिला ! तवाफ़-दिलां कुन् कि काबए-मख्फ़ीस्त ।
कि आँ खलील् बिना कर्द् व ई खुदा खद सास्त ॥

اے دل — دلوں کی پرکرمما کر کہ انسان کا دل
(ہردی) چھپا ہوا کعبہ ہے۔ اس کعبہ کو خلیل نے بلایا۔
مگر اس کو تو خود خدا نے بلایا ہے •

ऐ दिल ! दिलों की परिक्रमा कर, कि इन्सान का दिल
(हृदय) छिपा हुआ काबा है । उस काबे को खलील ने बनाया.
मगर इसको तो खुद खुदा ने बनाया है ॥

दीवाचा (भूमिका)

बनारसमें तारीख १३-१४-१५ अक्टूबर सन् १९२३ को संयुक्तप्रान्त (मुमालिक मुत्तहिदा) की राजनीतिक कान्फरेन्स हुई। स्वागत-समिति (कमेटी इस्तिक्बालिया) के सभापतिकी हैसियतसे श्रीभगवान्दासने खूतबा (व्याख्यान) किया। सब धर्मों मजहबों को अस्ली एकता के बारेमें जो उन्होंने कहा वह कलकत्तेके मशहूर दरियादिल दानी रईस सेठ धनश्यामदासजी बीड़ला को इस देसके बाशिंदोंके लिये इतना मुफीद (गुणकारी) मालूम हुआ कि उन्होंने यह इरादा (निश्चय) किया कि इसकी कई हजार कापी छाप कर चारों तरफ बांटी जायं। उसी इरादेके मुताबिक (अनुसार) यह मजमून (वक्तव्य) देसकी खिदमत में पेश किया जाता है। स्पीचमेंसे कुछ थोड़ा मजमून जो और बातोंके मुताबिक (सम्बन्ध में) था वह छोड़ दिया गया है।

व्यवस्थापक (मुन्तज़िम)

ज्ञानमण्डल छापाखाना, बनारस।

دیباچہ (بھومکا)

بنارس میں تاریخ ۱۳-۱۴-۱۵ اکتوبر سنہ ۱۹۲۲ء
 کم سنجکت پراست مسالک متحدہ (کی راج نہتک
 کانفرنس ہوئی۔ سواکت سیمتی (کسیتی استقبالیہ)
 کے سہا پتی کی حیثیت سے شری بھگوان داس نے
 خطبہ (ویاکھبان) کیا۔ سب دھرسوں مذہبوں کی
 اصلی ایکتا کے بارے میں جو انہوں نے کہا وہ کلکتہ کے
 مشہور دریا دل دانی رئیس سیتھ گھنشیام داس جی
 ہولا کو اس دیس کے باشندوں کے لئے اتنا مفید (کن گاری)
 معلوم ہوا کہ انہوں نے یہہ (ادادہ) (نشچہ) کیا کہ
 اسکی کئی ہزار کاپی چھاپ کر چارو طرف ہانتی جائیں۔
 اسی (ادادہ) کے مطابق (انوسار) یہہ مضمون (وکتویہ)
 دیس کی خدمت میں پیش کیا جاتا ہے۔ اسپہج
 میں سے کچھ تھوڑا مضمون جو اور باتوں کے متعلق
 (مسلکہ میں) تھا وہ چھوڑ دیا گیا ہے •

دیوستھاپک (ملتظم)

گھان ملندل چھاپہ خانہ بنارس

ॐ परमात्मने नमः।

बिस्मिल्लाह अर्रहमान् अर्रहीम।

स्पेशल कांग्रेसके आगे दो भगड़े।

.....१५-१९ सितम्बर, १९२३ की दिल्ली की स्पेशल कांग्रेस कौंसिलके भगड़ेका निपटारा करनेके लिये बुलाई गई। पर वह बैठने न पाई थी कि एक और ऐसा भगड़ा देसमें नये सिरसे उठा, यानी मजहबी भगड़ा, जिसके आगे कौंसिलोंका भगड़ा बच्चोंका खेल हो गया, और सारा काम कांग्रेसका, जो उस छोटे भगड़ेसे रुक रहा था, इस बड़े भगड़ेसे बिलकुल बन्द ही हो गया। इस लिये दिल्लीकी कांग्रेसके आगे बजाय एकके दो भारी मसले आ पड़े। दोनो बातों पर उसने समझौता कर दिया। कौंसिलकी बात मजहबी भगड़ोंकी बातके मुकाबिले कम जरूरी है। इसलिये थोड़ेमें मैं उसकी चर्चा पहिले कर देता हूँ।

मजहबी भगड़ा।

अब मैं दूसरे और भारी भगड़ेका जिक्र करूंगा। ख़दर, शांति, अछूतोद्धार, मजहबी एका, ये चार चीजें स्वराजकी जड़ बुनियाद हैं—ऐसा महात्माजी बराबर कहते रहे। ख़दरके मानी रोजगारी स्वराज, अछूतोद्धारके मानी मुहब्बत और इंसानियतका झूठे अहंकार और झूठी पवित्रताके ऊपर स्वराज, शांतिके मानी अक्रलका हाथ पैर पर स्वराज, मजहबी एकाके मानी दिलकी नेकनीयतीका बदनीयतीके ऊपर स्वराज। जितना जांच कीजिये उतना ही निश्चय मालूम होगा कि मजहबी एका होना, मजहबी भगड़ोंका मिटना, यह दूसरी सब भलाइयोंकी जड़ बुनियाद है।

اوم - پرماتنے نمد-
بسم الله الرحمن الرحيم

اسپیشل کانگریس کے آگے دو جھگڑے

.....۱۵-۱۹ ستمبر سنہ ۱۹۲۳ء کی دہلی کی اسپیشل کانگریس کونسل کے جھگڑے کا نیٹارا کرنے کے لئے بلائی گئی۔ پورہ بیٹھنے کے پائی تھی کلا ایک اور ایسا جھگڑا دیس میں فٹے سر سے اُٹھا۔ یعنی مذہبی جھگڑا جسکے آگے کونسلوں کا جھگڑا بچوں کا نہیں ہو گیا اور سارا کام کانگریس کا جو اُس چھوٹے جھگڑے سے رک گیا تھا اس بڑے جھگڑے سے بالکل بند ہی ہو گیا۔ اس لئے دہلی کانگریس کے آگے بجائے ایک کے دو بھاری۔ سٹلے آپڑے۔ درنوں باتوں پر اس نے سمجھوتا کر دیا۔ کونسل کی بات مذہبی جھگڑوں کی بات کے مقابلے کم ضروری ہے۔ اس لئے تھوڑے میں میں اُسکی چرچا پہلے کر دیتا ہوں * * *

مذہبی جھگڑا

اب میں دوسرے اور بھاری جھگڑے کا ذکر کرونگا۔ کھدر شانتی اچھوت اُدھار مذہبی ایک پہا چار چیزیں سراج کی جڑ بنیاد ہیں۔ ایسا سہاقما جی برابر کہتے رہے۔ کھدر کے معنی روزگاری سراج۔ اچھوت اُدھار کے معنی محبت اور انسانیت کا جھوٹے اہلکار اور جھوٹے پوتوتا کے اوپر سراج۔ شانتی کے معنی عقل کا ہاتھ پیر پر سراج۔ مذہبی ایک کے معنی دل کی ٹیک نیستی کا بد نیستی کے اوپر سراج۔ جتنا جانچ کیجئے اُتنا ہی نشچے معلوم ہوگا کلا مذہبی ایک ہونا مذہبی جھگڑوں کا مثلاً۔ پہا دوسری سب بھائیوں کی جڑ بنیاد ہے *

हर आदमी अच्छी तरह जानता है, और हर आदमी मुंहसे कहता भी है, कि जब तक ये आपसके मजहबी झगड़े जारी रहेंगे तबतक स्वराज नहीं ही मिल सकता। पर कुछ ऐसी माया है कि यह सब जानते, मानते, बखानते हुए भी लोग धर्म मजहबके नामसे एक दूसरेका काम बिगाड़नेका जतन करते ही हैं। और अपना भी काम बिगाड़ते ही हैं।

इस फ़सादका मूल कारण यानी असली वजह।

इस झगड़ेकी जो सूरत इधर हुई है, जो बड़े बड़े फ़साद कई बड़े शहरों और कस्बोंमें हुए हैं, उनको यहां बखाननेकी जरूरत नहीं है। शुक्र (धन्यवाद) का मुकाम (अवसर) है कि दिल्लीकी स्पेशल कांग्रेसके बाद कोई नये फ़साद नहीं सुने गये हैं, वहांके समझौतेका कुछ असर देसमें हुआ, ऐसा मालूम होता है। खासकर उस घोषणा (एलान्) का जो दोनों मजहबोंके एक सौ मजहबी तथा राजनीतिक नेताओंके दस्तखतसे मिल कर हुआ। और वह समझौता हर तरहसे गनीमत है। पर उसको स्थिर (मुस्तहकम) करनेके लिये, उसकी जड़ मजबूत करनेके लिये, उसको कायम रखनेके लिये, कुछ और कामकी भी जरूरत है। और मैं दिलसे आशा करता हूं कि वह काम इस कान्फ़रेन्समें शुरू कर दिया जायगा। मैंने गया की कांग्रेसमें उसको पेश करनेकी कोशिश की थी। और मुझे यकीन है कि अगर वहां यह काम शुरू कर दिया जाता तो इन फ़सादोंकी नौबत न आती। दिल्लीमें भी मैंने नेताओंका ध्यान इस ओर दिलाया, और आपसे भी बही अप्रण करता हूं।

ہر آدمی اچھی طرح جانتا ہے تو ہر آدمی منہ سے کہتا بھی ہے کہ جب تک یہاں آپس کے مذہبی جھگڑے جاری رہینگے تب تک سراج نہیں ہی مل سکتا - پھر کچھ ایسی مایا ہے کہ سب جانتے - مانتے بکھاتے ہوئے بھی لوگ مذہب کے نام سے ایک دوسرے کا کام بگاڑنے کا جتن کرتے ہی ہیں اور اپنا ہی کام بگاڑتے ہی ہیں •

اس فساد کا مول کارن یعنی اصلی وجہ

اس جھگڑے کی جو صورت ابھر ہوئی ہے جو بڑے بڑے فساد کئی بڑے شہروں اور ضلعوں میں ہوئے ہیں اکثر یہاں بکھاتے کی ضرورت نہیں ہے - شکر (دہلییاد) کا مقام (اوسر) ہے کہ دہلی کی اسپیشل کانگریس کے بعد کوئی نئے فساد نہیں سنے گئے ہیں - وہاں کے سمجھوتے کا کچھ اثر دیش میں ہوا ایسا معلوم ہوتا ہے - خاص کر اُس کھوشا (اعلیٰ) کا جو دونوں مذہبوں کے ایک سر مذہبی تھا راج ٹینک ٹیٹارن کے دستخط سے ملکر ہوا - اور وہ سمجھوتا ہر طرح سے غلط ہے - پھر اُسکو استور (مستحکم) کرنے کے لئے اُسکی جو مضبوط کرنے کے لئے اُسکو قائم رکھنے کے لئے کچھ اور کام کی بھی ضرورت ہے - اور میں دل سے آھا کرتا ہوں کہ وہ کام اس کانفرنس میں شروع کر دیا جائیگا - میں نے کیا کی کانگریس میں اُس کو بھی کرنے کی کوشش کی تھی اور مجھے یقین ہے کہ اگر وہاں یہ کام شروع کر دیا جاتا تو اس فساد کی ٹوپ نہ آتی - دہلی میں بھی میں نے ٹیٹارن کا دھیان اس طرح دلایا - اور آپ سے بھی وہی معنی نکلا ہوتا ہے •

स्वराज शब्दके अर्थमें भूल ।

स्वराजके मीठे लफ्ज़के पीछे सब लोग मिलकर दौड़े । स्वराजकी ठीक ठीक शकल सूरत पहिचाननेकी कोशिश नहीं की । उमेद की थी कि थोड़ी मिहनतसे बड़ी चीज़ थोड़े वक्तमें मिल जायगी । जब नहीं मिली तो हमलोग एक दूसरेको इल्जाम देने लगे, और आपसमें लड़ने लगे । हमेशाका दस्तूर है कि जब काम नहीं बनता तो काम करनेवाले एक दूसरेको दोष देने लगते हैं । जैसा नीति जाननेवालों ने कहा है, “यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखर-स्तत्र हन्यते” । इस लड़ाईकी दो सूरतें हुईं । जो शाइस्ता पढ़े लिखे लोग थे उनमें तो सत्याग्रह और कौंसिलके मसलोंपर कागज़ी और ज़बानी लड़ाई शुरू हुई । और यह लड़ाई जब ज्यादा बढ़ी, तब दूसरे दलों (गरोहों) में, जिन्होंने भीतर भीतर यह समझ रखा था कि स्वराजके मानी हमारे ही मजहबवालोंका राज, वह बिगड़ा हुआ स्वराजका जोश एक दूसरेकी हाथापाई, मारपीट, और लूटपाटमें उबल पड़ा ।

धर्म मजहब के मानीमें भूल ।

इसकी ख़ास वजह यह है कि जैसा हम लोगोंने स्वराजका मतलब नहीं समझा है वैसा ही मजहब धर्मकी भी असल शकल नहीं पहिचानते हैं । अब तक हमलोग एक दूसरोंको यही कहते आये कि लड़ो मत, लड़ो मत, मेल करो, मेल करो, नहीं तो स्व-राज नहीं पाओगे । इस तरह स्वराजकी मिठाईकी लालचसे ही जो मेल किया जायगा वह कबतक ठहर सकेगा ? जब तक मजहबोंका मेल नहीं किया जायगा, उनके सिद्धांतों (उसूलों) का

سوراج شبد کے ارتھہ میں بھول

سوراج کے میٹھے لفظ کے پیچھے سب لوگ ملکر دوڑے - سوراج کی ٹھیک ٹھیک شکل صورت پہچاننے کی کوشش نہیں کی - اُمید کی تھی کہ تھوڑی محنت سے بڑی چیز تھوڑے وقت میں ملجاریگی - جب نہیں ملی تو ہم لوگ ایک دوسرے کو الزام دینے لگے اور آپس میں لڑنے لگے ہمیشہ کا دستور ہے کہ جب کام نہیں بنتا تو کام کرنیوالے ایک دوسرے کو دوش دینے لگتے ہیں - جیسا کہ نیتی جاننے والوں نے کہا ہے *

یہی کارہہ ویتہ سیان مکھرسستر ہنیتے

اس لڑائی کی در صورتیں ہرئیں - جو شایستہ پڑھے لکھے لوگ تھے اُن میں تو ستیاگرو اور کونسل کے مسلوں پر کاغذی اور زبانی لڑائی شروع ہوئی - اور یہ لڑائی جب زیادہ بڑھی تب دوسرے دلوں (گروہوں) میں جنہوں نے بھیڑ بھیتو یہ سمجھا رکھا تھا کہ سوراج کے معنی ہمارے ہی مذہب والوں کا راج وہ بگڑا ہوا سوراج کا جوش ایک دوسرے کی ہاتھ پائی ماریت اور لڑت پات میں اُبل پڑا *

دھرم مذہب کے معنی میں بھول

اسکی خاص وجہ یہ ہے کہ جیسا ہم لوگوں نے سوراج کا مطلب نہیں سمجھا ہے ویسا ہی مذہب دھرم کی بھی اصل شکل نہیں پہچانتے ہیں - اب تک ہم لوگ ایک دوسرے کو یہی کہتے آئے کہ لڑو مت لڑو مت میک کر میک کر نہیں تو سوراج نہیں پاؤگے - اسبطرح سوراج کی مٹھا ٹی کی لالچ سے ہی جو میک کیا جاویگا وہ کپ تک ٹھہر سکیگا؟ جب تک مذہبوں کا میک نہیں کیا جاویگا اُن کے سدھاتوں (اُصولوں) کا

एका सबको न दिखाया जायगा, तब तक मजहब वालोंका भी सच्चा मेल कभी नहीं होगा। और जब तक स्वराजकी सच्ची शकल सबको नहीं बताई जायगी और उसका तसफीया समझौता नहीं कर लिया जायगा तब तक मजहबवालों धर्मवालों में और गरोह गरोहमें, हिन्दुस्तानी यूरोपीयनमें, हिंदू-मुसल्मानमें, जमींदार काश्तकारमें, दूकानदार खरीदारमें, ज्ञाताज्ञातमें, रोजगार रोजगारमें, अहल्कार औरअहल्कारमें, हमेशा आपसमें बेएतबारी अविश्वास बना रहेगा, और दिली मेल और एकासे स्वराजके लिये कोशिश न की जायगी, बल्कि खुले तौर से या छिपे तौरसे एक दूसरेका काम रोका जायगा, और जो कुछ एका और मेल होगा वह सिर्फ ऊपरी, दिखनावती, बनावटी और चंदरोजा होगा। लेकिन धर्म मजहब की अस्तित्वत पहिचाननेसे सब धर्मों मजहबों का मेल ही मेल देख पड़ेगा। और स्व-राज में “स्व” की अस्ती सच्ची सूरत पहिचानने से धर्म-मजहब की भी अस्तित्वत मालूम हो जायगी; और मजहबी मगड़े भी मिट जायंगे, और सियासी तफर्के, राजनीतिक मगड़े, और गरोह गरोहके आपसके शक शुबहें भी रफा हो जायंगे, जिन्ही शक शुबहों की वजहसे हमारी स्वराज की लड़ाई रुक रही है, क्योंकि इस वक़्त हर एक आदमी या गरोह स्वराजका अर्थ अपने मनमाना लगा रहा है, और भीतर भीतर समझता है कि स्वराज होने पर हम दूसरोंको दबावेंगे, या डरता है कि दूसरे हमका दबावेंगे, और इसी लिये सब दिलसे काममें मदद नहीं देता, गो मुंहसे सबके सब अहल्कार और यूरोपीयन भी कहते और कबूलते हैं कि हिन्दुस्तानको स्वराज मिलना ही चाहिये।

मतलबी यारी और अस्ती यारी।

मतलबकी यारी मतलबके साथ बनेगी और बिगड़ेगी, बल्कि यह

ایکا سب کو تک دکھایا جاوینگا تب تک مذہب والوں کا بھی سچا میک
 کبھی نہیں ہوگا — اور جب تک سوراج کی سچی شکل سب کو نہیں
 بتائی جائیگی اور اوسکا تصفیہ سمجھوتا نہیں کر لیا جائیگا تب تک
 مذہب والوں دھرم والوں میں اور کدوہ کدوہ میں — ہندوستانی یورپیوں
 میں — ہندو مسلمان میں — زمیندار کاشتکار میں — ہوکادار خریدار میں
 ذات ذات میں — روزگار روزگار میں — اہلکار غیر اہلکار میں — ہمیشہ
 آپس میں بے اعتباری اوشواس بنا رہیگا — اور اہلی میک اور ایک سے
 سوراج کے لئے کوشش نہ کیجائیگی — بلکہ کھلے طور سے یا چھپے طور سے
 ایک دوسرے کا کام روکا جائیگا — اور جو کچھ ایک اور میک ہوگا وہ
 صرف اوپر دی دکھتاوٹی بناوٹی اور چمک دوزہ ہوگا — لیکن دھرم مذہب کی
 اصلیت پہچاننے سے سب دھرموں مذہبوں کا میک ہی میک دیکھ پڑیگا —
 اور سوراج میں ”سو“ کی اصلی سچی صورت پہچاننے سے دھرم -
 مذہب کی بھی اصلیت معلوم ہو جائیگی — اور مذہبی جھگڑے بھی مد
 جائینگے — اور سیاسی فرقے راج نیک جھگڑے اور کدوہ کدوہ کے آپس
 کے شک شبہ بھی رفع ہو جائینگے — جنہیں شک شبہوں کی وجہ سے
 ہماری سوراج کی لڑائی رک رہی ہے — کیونکہ اسوقت ہر ایک آدمی
 یا کدوہ سوراج کا ارقہ اپنے میں مانا لگا رہا ہے — اور بہتر بہتر سمجھتا
 ہے — کہ سوراج ہونے پر ہم دوسروں کو دباوینگے — یا قوتاً ہے کہ
 دوسرے ہم کو دباوینگے — اور اسی لئے سچے دل سے کام میں مد نہیں
 دیتا — گو مذہب سے سب کے سب اہلکار اور یورپیوں بھی کہتے اور قبولتہ
 ہیں کہ ہندوستان کو سوراج ملنا ہی چاہئے *

مطلبی یاری اور اصلی یاری

مطلب کی یاری مطلب کے ساتھ بنیگی اور بگڑیگی — بلکہ یہ

कहना चाहिये कि उसमें सदाकृत, सत्यता, निश्छलता नहीं हो सकती, इसलिये मतलब को भी बिगाड़ेगी और आप भी बिगाड़ेगी ही, बनेगी नहीं। बहुत मोटी बात है, एक ही रोटी अगर आपका भी और हमारा भी लक्ष्य (मक़सद) है, तो तीसरेसे छीननेके लिये तो जरूर हम आप मेल कर लें, पर छीन लेनेके बाद क्या हालत होगी ? आप खाओगे या हम खायेंगे ? इसपर तो फिर हमारे आपके बीच लाठी चलैगी ? यूरुपकी हालत आंखके सामने है। जर्मनीको हराने तक बड़ा मेल था, अब घूराघूरी है। इस लिये रोटी किस चीज़को कहते हैं और उसका कैसे आपसमें बटवारा होगा, स्वराजकी क्या शकल होगी, कि जिस से किसी गरोह की भी रोटी एक बारगी और सबकी सब न मारी जायगी, यह पहिलेसे ही समझ लेना जरूरी है। और इसी समझनेके लिये मतलबकी यारी छोड़कर अस्ली यारी पकड़ना चाहिये। और स्वराज मिले या न मिले, सब मजहबोंके माननेवालोंमें आपसमें मेल इस वास्ते होना चाहिये कि सब धर्मों, सब मजहबों, के अस्ली उसूल एक हैं। खुदा परमात्मा एक है, उसीने सब इन्सानोंको बनाया है, और सब इन्सानोंके दिल में बैठा हुआ है, सिर्फ़ खुदीके पर्देने उस खुदाको हमसे छिपा रक्खा है, स्वार्थ ने परमार्थ को ढांक दिया है, जो फर्क और भेद है वह केवल नामोंका ही है। जब हम सब ऐसा समझेंगे, और समझावेंगे, तभी सच्ची यारी होगी, और तभी स्वराज वगैरह सभी नेमतें सहजमें मिल जायेंगी।

जैसा ईसाने कहा है, “पहिले नेकदिली हासिल करो, उसके बाद और सब चीज़ें तुम्हें आप मिल जायंगी ”।

کہنا چاہئے کہ اس میں صداقت - ستیتا - نشچھلتا نہیں ہو سکتی -
 اسلئے مطلب کو بھی بگاڑینگے - اور آپ بھی بگاڑینگے ہی بنینگے نہیں -
 بہت موٹی بات ہے - ایک ہی روٹی اگر آپکا بھی اور ہمارا بھی لکھ
 ((مقصد)) ہے تو تیسرے سے چھیننے کے لئے تو ضرور ہم آپ میل کر لینے
 پر چھین لینے کے بعد کیا حانت ہوگی ؟ آپ کھاؤ گے یا ہم کھائینگے ؟
 اس پر تو پھر ہمارے آپ کے بیچ لائوی چلیگی ؟ یورپ کی حالت
 آنکھ کے سامنے ہے - جرمنی کو ہرانے تک بڑا میل تھا - اب
 کھورا کھوری ہے - اسلئے روٹی نس چیز کو کہتے ہیں اور اُسکا کیسے
 آپس میں بٹاؤ ہوگا - سوراخ کی کیا شکل ہوگی کہ جس سے
 کسی گروہ کی بھی روٹی ایک بارگی اور سب کی سب نہ ماری جائیگی -
 یہ پہلے سے ہی سمجھ لیتا ضروری ہے - اور اسی سمجھنے کے لئے مطلب
 کی یاری چھوڑ کر اصلی یاری پکڑنا چاہئے - اور سوراخ ملے یا نہ ملے -
 سب مذہبوں کے ماننے والوں میں آپس میں میل اسراطلے ہونا چاہئے
 کہ سب دھرموں - سب مذہبوں کے اصلی اصول ایک ہیں - خدا پر ماقما
 ایک ہے - اُسی نے سب انسانوں کو بنایا ہے اور سب انسانوں کے دل
 میں بیٹھا ہوا ہے - صرت خودی کے پردے نے اُس خدا کو ہم سے چھپا
 رکھا ہے - سورتھ نے پرمارتھ کو قہانک دیا ہے - جو فرق اور
 بھید ہے وہ کیرل ناموں ہی کا ہے - جب ہم سب ایسا سمجھینگے اور
 سمجھا رہینگے تبھی سچی یاری ہوگی اور تبھی سوراخ وغیرہ سبھی نعمتیں
 سچ میں ملجائینگے *

جیسا میں نے کہا ہے - ”پہلے ٹیک دلی حاصل کرو - اسکے بعد پھر
 سب چیزوں تمہیں آپ مل جائیگی“ *

सब धर्मों के उसूल एक हैं ।

सूफियोंने कहा ही है,
फकत तफावत है नाम ही का दर अस्त सब एक ही हैं यारो ।
जो आबि-साफी कि मौजमें है उसी का जल्वा हबाबमें है ॥
केवल नामका भेद है, अस्तमें सब एक हैं । जो ही पानी
समुद्रकी लहरमें है वही बबूलेमें भी चमकता है ।)

मौलाना रूमने कहीं एक कहानी कही है । एक अरबी, एक
इरानी, एक तुर्कीका सफरमें साथ हो गया—चलते चलते भूख
लगी, जितने पास पैसे थे इकट्ठा किये । क्या खरीदना चाहिये ?
अरबीने कहा एनब खरीदना चाहिये, तुर्कीने कहा बदक, ईरानीने
कहा अंगूर । हुज्जत शुरू हुई । मारामारीकी नौबत आगई ।
एक मेवाफरोश दौरा लिये उधरसे निकला । उसने हुज्जत सुनी ।
बोला, लड़ो मत, मेरे पास तीनोंके पसन्दकी चीजें हैं, जो जिसको
चाहे ले लो । दौरा आगे रक्खा । उसमें एक ही किस्मका फल
था, मगर तीनोंने खुश होकर एक एक मुप्पा उठा लिया ।
क्या बात हुई ? अंगूर ही को अरबीमें एनब कहते हैं, तुर्कीमें
बदक, फारसीमें अंगूर, शायद पहलवीमें दाख कहते हैं, और
संस्कृतमें द्राक्षा । इस छोटी हिक्कायतमें सब धर्मों और मजहबोंका
सत्त-सार दिखा दिया है—“फकत तफावत है नाम ही का दर
अस्त सब एक ही हैं यारो” । खुदा बड़ा मेवाफरोश है, उसको
सबका भला मञ्जूर है, सबको मेवा देना चाहता है, सबकी
बोली समझता है, सबके दिलमें बैठा है, पर अगर हमको खुदाके

سب دھرموں کے اصول ایک ہیں

صوفیوں نے کہا ہی ہے —

فقط تفاوت ہے نام ہی کا

در اصل سب ایک ہی ہیں یارو =

جو آب صافی کہ موج میں ہے

اُسی کا جلوہ حباب میں ہے۔

(کیڑل نام کا بھید ہے — اصل میں سب ایک ہیں — جو ہی پانی سمندر

کی لہر میں ہے وہی بڑے میں بھی چمکتا ہے *)

مولانا روم نے کہیں ایک کہانی کہی ہے کلا ایک عربی — ایک ایرانی اور

ایک ترکی کا سفر میں ساتھ ہرگیا — چلتے چلتے بھوک لگی — جتنے

پاس پیسے تھے اٹکھا کئے — کیا خریدنا چاہئے ؟ عربی نے کہا عنب خریدنا

چاہئے — ترکی نے کہا بدک — ایرانی نے کہا انگور — حبیب شروع ہوئی —

سارا ماری کی نوبت آگئی — ایک میوہ فروش دورا لئے اُدھر سے نکلا — اُسے

حبیب سنی بولا تو مٹ — میرے پاس تیزوں کے پسند کی چیزیں ہیں — جو

جسکو چاہے لے لو — دورا آگے رکھا — اُس میں ایک ہی قسم کا پھل تھا —

مگر تینوں نے خارش ہو کر ایک ایک جھپا اُٹھا لیا — کیا بات ہوئی ؟

انگور ہی کر عربی میں عنب کہتے ہیں — ترکی میں بدک — فارسی میں

انگور — شاید پہلوی میں داخ کہتے ہیں اور سنسکرت میں دراکشا — اس

چھوٹی حکایت میں سب دھرموں اور مذہبوں کا نست سار دکھادیا ہے — ”فقط

تفاوت ہے نام ہی کا — در اصل سب ایک ہی ہیں یارو“ — خدا بڑا

مہیوہ فروش ہے — اُسکو سب کا بھلا منظور ہے — سب کو میوہ دینا چاہتا ہے —

سب کی بڑتی سمجھتا ہے سب کے دل میں بیٹھا ہے — پر اگر ہمکو خدا کے

मजहबकी परवा नहीं, “हमारा मजहब” “हमारा मजहब” इसीका हमहमा (अहमहमिका) है, तो मेवे तो मिलेंगे नहीं, सिर ही टूटेंगे ।

अल्ला-परमात्मा, खुदेश्वर, एक है । नाम ही बहुत हैं ।

आप यकीन मानिये, जो खुदा आपके और मेरे दिलमें बैठा है, उससे मैंने भी बहुत बार पूछा, और आप भी जब चाहिये पूछ सकते हैं, वह यही जवाब देता है और देगा कि मैं अरबी भी समझता हूं, संस्कृत भी, और अगरेजी, फारसी. जिन्द, हिंदु-स्तानी, चीनी, जापानी, नई, पुरानी, सभी जबानोंको जानता समझता हूं—मैंही ने तो उन्हें भी और तुम्हें भी बनाया है, चाहे जिस जबानमें मेरा नाम लो, मुझे याद करो, मुझे पहिचानो, मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी नेक खाहिशें पूरी करूंगा । लेकिन अगर हम इस हमहमेंमें पड़ें कि जो मेरे मुंहसे निकले वही सब लोग कहें, मेरी ही नकल सब करें, मेरा ही मजहब फैले, तो दूसरे भी ऐसा ही झूठा और थोथा हठ क्रोध करेंगे और जो गढ़े हम दूसरोंके लिये खोदेंगे उनमें हम खुद गिरेंगे, जो जहर दूसरोंके लिये बोवेंगे उससे खुद मरेंगे ।

इसलिये भाइयो, दोस्तो, अगर हम लोग मतलबी नहीं बल्कि सच्ची दोस्ती चाहते हैं तो,

ऐ ब चश्मानि दिल् मर्बी जुज् दोस्त,

हर् चि बीनी बिदाँ कि मज्हरि ऊस्त ।

अर्थात्, दिलकी आंखसे सबको दोस्त ही दोस्त देखो, जो कुछ देखो उसको उसी अल्ला-परमात्माका रूप जानो ।

مذہب کی پروا نہیں۔ ”ہمارا مذہب“۔ ”ہمارا مذہب“ اسی کا ہے
(اہمہکا) ہے تو میرے تو ماینگے نہیں سر ہی توئیگے *

اللہ پر ماتما - خدیشور ایک ہے نام ہی بہت ہیں۔

آپ یقین مانئے۔ جو خدا آپ کے اور میرے دل میں بیٹھا ہے
اُس سے میں نے بھی بہت بار پوچھا اور آپ بھی جب چاہئے پوچھ سکتے
ہیں۔ وہ یہی جواب دیتا ہے اور دیکھا کہ میں عربی، ہندی، سمجھتا ہوں۔
سنسکرت، بھٹی اور انگریزی - فارسی - ژند - ہندوستانی - چینی - جاپانی
نئی پرانی - بھی زبانوں کو جانتا سمجھتا ہوں۔ میں ہی نے تو انہیں
بھی اور تمہیں بھی بتایا ہے۔ چاہے جس زبان میں میرا نام ہو - مجھے
یاد کرو - مجھے پہچانو - مجھے سے دعا مانگو - میں تمہاری نیک
خواہشیں پوری کرونگا۔ لیکن اگر ہم اس ہم سے میں پڑیں کہ جو میرے
منہ سے نکلے وہی سب لوگ کہیں - میری ہی نقل سب کریں - میرا ہی
مذہب پھیلے - تو دوسرے بھی ایسا ہی جھوٹا اور تھوڑا ہٹ اور کروڑ
کریں گے۔ اور جو گڑھے ہم دوسروں کے لئے کھودینگے اُن میں ہم خود
کریں گے - جو زہر دوسروں کے لئے بوئیگے اُس سے خود مرینگے *

اس لئے بھائیو دوستو اگر ہم لوگ مطالبی نہیں بلکہ سچی
دوستی چاہتے ہیں تو۔

اے بھٹشان دل میں جز دوست

ہر جہ ہمتی بدان کہ مظهر دوست

ارتھات دل کی آنکھ سے سب کو دوست ہی دوست دیکھو جو کچھ

سو اسکو اُسی اللہ پر ماتما کا روپ جانو *

यही अर्थ संस्कृत लफ्जोंमें वेदोंमें कहा है,

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥

यानी जो कोई सब चीजोंको आत्मामें और आत्माको सब चीजोंमें देखता है, वह फिर किसीसे जुगुप्सा (नफ़्त) नहीं करता।

यही अथ अरबी शब्दोंमें सूफ़ियोंने कहा है,

मन् अरफ़ा नफ़्सहू फ़कद् अरफ़ा रब्बहू ।

यानी जिसने अपनेको पहिचाना उसने ब्रह्म-रब्बको पहिचाना। इसी अर्थको- कुरानमें दूसरे लफ्जोंमें कहा है, “नसुल्लाहा फ़अन्-साहुम् अन्फ़ुसहुम्”, यानी जो अल्ला-परमेश्वरको भूले वे अपनी नफ़्स अपनी आत्माको भूले।

कुरानमें कहा है,

अल्ला हो बि कुल्ले शयीन् मुहीत् । यानी अल्ला सब चीजोंको घेरे है।

वेद-उपनिषत्में ठीक यही कहा है, ब्रह्म...सर्वमावृत्य तिष्ठति ।

कुरान कहता है, अल्लाहो नूरसमावाती वल् अर्द । यानी खुदाके नूरसे आस्मान और ज़मीन रौशन है, या खुदा ही आस्मान और ज़मीनकी रौशनी है, रूह है, चेतना है।

ठीक यही मजमून वेद भी कहता है, तमेव भांतमनु भाति । सर्वं तस्यैव भासा सर्वमिदं विभाति ।

कुरानकी आयत है, हुवल् अन्वल् हुवल् आखि हुवल् जाहिर हुवल् बातिन् व हुवा अला कुल्ले शयीन् कदीर । ठीक यही अर्थ गीताके श्लोकका है।

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामंतः एव च ॥

یہی ارتھہ سنسکرت لفظوں میں دیدوں میں کہا ہے -

یستہ سروان بھوتان آتھوا نیشیتی
سرو بھوتیشہ چاتسانم تھو نہ وجگپستے -

یعنی جو کوئی سب چیزوں کو آتما میں اور آتما کو سب چیزوں میں
دیکھتا ہے وہ پھر کسی سے جگپسا (نفرت) نہیں کرتا *

یہی ارتھہ عربی شیدوں میں صوفیوں نے کہا ہے -

من عرف نفسه فقد عرف ربه -

یعنی جس نے اپنے کو پہچانا اُس نے برہم رب کو پہچانا - اسی ارتھہ کو
لوان میں دوسرے لفظوں میں کہا ہے - ”نورا اللہ فانسہم انفسہم“ - یعنی
جو اللہ - پرمیشور کو بھولے وہ اپنی نفس اپنی آتما کو بھولے *
قرآن میں کہا ہے - ”اللہ بک شئی معیط“ یعنی اللہ سب چیزوں
کو گھیرے ہے *

وید اپنشد میں تھیک یہی کہا ہے - ”برہم سروما ورثیک نشتھتی“ -
قرآن کہتا ہے - ”اللہ نور السموات و الارض“ یعنی خدا کے نور سے
آسمان اور زمین روشن ہے - یا خدا ہی آسمان و زمین کی روشنی ہے -
روح ہے - جیپنا ہے *

تھیک یہی مضمون وید بھی کہتا ہے -

تییو بھاتمنر بھاتی سروم تسیئو بھاسا سرومدم وبھاتی *

قرآن کی آیت ہے - ”ہوالاول والاخر والظاهر والباطن وهو علی
کل شئی قدير“ - تھیک یہی ارتھہ گیتا کے شلوک کا ہے -

اھماتسا گڈا کھس سرو بھوتا شیشکھتہ

اھمادشچہ مدھینچہ بھوتا مانت ایرچہ *

इब्जीलमें भी यही कहा है “गाड इब् दी आल्फा एंड् दी ओमेगा” । यानी परमात्मा-खुदा-गाड आदि-अव्वल है, अन्त-आखिर है, मध्य-बीच है, हमारे बाहर भी है, हमारे भीतर भी (चेतना, होश, जान, की शकलसे) है ।

“ला इलाह इल् अल्ला” इस कलमेका अर्थ पहुंचे हुए, रसीदा, (अच्छतीति अषिः) सूफियोंने यही किया है कि “ला मौजूदा इल्ला अल्लाहु”, यानी है नहीं कोई चीज सिवा उस खुदाके । कुरानमें फिर फिर कहा है, “हुवल हय्यो ला इलाहा इल्ला हू” “ला इलाहा इल्ला अना” वगैरा, यानी वही आत्मा ही जिन्दा है क्योंकि कोई है ही नहीं सिवा उसके, नहीं कोई मौजूद है सिवा मेरे नहीं कोई खुदा है सिवा मेरे (अर्थात् सिवा मैंके, चेतनाके, आत्माके) । “वसेआ रब्बोना कुल्ले शयीन् इल्मा”, यानी सब चीजोंमें फैला हुआ इल्म (चेतना ही खुदा है) । सूफियोंने भी अरबी फारसी में ये ही बातें कही हैं, “अन् अल् हक्” यानी “अहं ब्रह्मास्मि”, “म ही सच है, परमात्मा है, अल्ला है” । “सोहम्”, अर्थात् वह मैं है, औरमैं वह है । “हक् तूई”, “तत्वमसि”, अर्थात् सच-खुदा तू ही है, तूही वह है । “हमा ऊस्त, हमा अज् ऊस्त, हमा अन्दर् ऊस्त”, यानी, सब उसीमें है, सब उसीसे है, सब वही है, बगरा । और कुरानमें कहा है कि “लाहुल् अस्मा ढल् हुस्ना”, यानी सब सुन्दरनाम उसीके हैं । “एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति”, यह वेदका भी वचन है । इब्जील में भी ईसा और दूसरे नबियों मनीषोंने कहा है, “आइ एण्ड् माइ फादर् आर् वन्”, “थी आर् दिल् विड् टेम्पल्स् आफ् गाड्”, “इन् हिम् आल् थिंग्ज् लिक् एंड् मूव् एंड् हाव् देयर बीङ्” इत्यादि, अर्थात् मैं और मेरा बनानेवाला एक ही है, तुम्ही सब परमात्माके जिन्दा मन्दिर हो, उसी परमात्मा (चेतना) में सबही चीजें जीती हैं, बसती हैं, और उसीसे अपनी सत्ता (अस्तित्व, हस्ती) पाती हैं । वेदोंमें, गीता आदिमें, यही बातें फिर फिर कही हैं, सिर्फ नमूनेके लिये

انجیل میں بھی یہی کہا ہے - ”گاۃ اِز دی آٹھا ایقہ می اُرمیگا“ -
 یعنی پرماتما خدا گاۃ آد اول ہے - اٹھ آخر ہے - مہیچہ بیچ ہے - ہمارے
 باہر بھی ہے - ہمارے بھیتر بھی (چیتنا ہوش جاں کی شکل ہے) *

”لا الہ الا اللہ“ اس کلمہ کا ارتھ پھنچے ہوئے رسیدہ (چھتیتی رشتہ)
 صرفیوں نے بھی کیا ہے کہ ”لا موجود الا اللہ“ - یعنی ہے نہیں کوئی چیز
 سوا اُس خدا کے - قرآن میں پھر پھر کہا ہے - ”ہو العی لا الہ الا ہو“
 ”لا الہ الا انا“ وغیرہ - یعنی وہی آتما ہی زندہ ہے - کیونکہ کوئی ہے ہی
 نہیں سوا اُسکے - نہیں کوئی موجود ہے سوا میرے - نہیں کوئی خدا ہے
 سوا میرے (ارتھات سوائے میں کے - چیتنا کے - آتما کے) ”وسع ربنا کل
 شئی علما“ یعنی سب چیزوں میں پھیلا ہوا علم (چیتنا) ہی خدا ہے -
 صرفیوں نے بھی عربی فارسی میں یہی باتیں کہی ہیں - ”انا الحق“ یعنی
 ”اھم برھما سہمی“ - میں ہی سچ ہے - پرماتما ہے - اللہ ہے - ”سوہم“
 ارتھات وہ میں ہے اور میں وہ ہے - ”حق توئی“ - ”تقوسمی“ - ارتھات
 سچ خدا تو ہی ہے - تو ہی وہ ہے ”ہمہ اوست - ہمہ از اوست -
 ہمہ اندر اوست“ - یعنی سب اسی میں ہے - سب اسی سے ہے - سب
 وہی ہے - وغیرہ - اور قرآن میں کہا ہے کہ ”لہ الاسماء الحسنی“ - یعنی
 سب سندر نام اُسی کے ہیں - ”ایکم سد وپرا بہودھا ودتتی“ یہ وید
 کا بھی بچن ہے - انجیل میں بھی عیسیٰ اور دوسرے نبیوں - ملیوں نے
 کہا ہے - ”اُئی ایقہ مائی ۶ در آر دن - یی آر دی لرنک ٹمپاس آت گاۋ -
 ان ہم آل تھنگس لو ایقہ موو ایند ہار دیر بیٹنگ“ - راتیاہی -
 ارتھات میں اور میرا بٹائیوا لا ایک ہی ہے - تمہیں سب پرماتما کے زندہ
 مندر ہو - اس پرماتما (چیتنا) میں سب ہی چیزیں جیتی ہیں -
 سستی ہیں اور اُسی سے اپنی ستا (استتو - ہستی) پاتی ہیں - ویدوں
 میں گیتا آد میں بھی باتیں پھر پھر کہی ہیں - سون نمونہ کے لئے

यहां कुछ वाक्योंको कहता हूं

यस्मिन् इदं यतश्चेद येनेवं य इदं स्वयम् ।

योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये महेश्वरम् ॥ (भागवत)

“देहो दवालयः प्रोक्तः”, “शिवोऽहम्”, “सर्वं खलु इदं ब्रह्म तज्जलान्” । “नेह नानास्ति किंचन”, “एकमेवाद्वितीयम्”, “विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायां”, “एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्व-
व्यापी सर्वभूतांतरात्मा”, “स वा एष आत्मा हृदि” “हृद्यन्त-
व्योतिः पुरुषः”, “यद्यद्विभूतिमत् सत्त्वं...मम तेजोऽशसंभवम्”
“ब्रह्मतद्धि सर्वाणि नामानि सर्वाणि रूपाणि सर्वाणि कर्माणि
विभर्त्ति”, “सर्वानुभूः”, इत्यादि ।

यह परमात्मा सबके हृदयमें मौजूद है इसी बातको कुरानका
हवाला देकर सूफियोंने कहा है,

बावजूदे कि मुझदये तेरा “नहन्तो अक्ररब”

सफहे कुरानमें लिखा था मुझे मालूम न था ।

‘अवतार-मसीह-रसूल ।

इस्लामी कलमेका जो दूसरा जुज है, यानी “मुहम्मद दुर्सूख-
ल्लाह”, इस्का अर्थ अगर यह किया जाय, यानी “यके अज्
रसूलानि अल्लाह”, तो किसी दूसरे धर्म वालेको भी इससे इनकार
नहीं हो सकता । कुरानका भी यही मंशा है । फिर फिर कहा है,
“बले कुल्ले कौमिन् हाद”, सब कौमोंके लिये हिदायत करने वाले
भेजे गये हैं, “ला नोफर्रिको बैना अहदिम् मिन् रसुलेह्”,
यानी रसूलोंमें फर्क नहीं है, सब बराबर हैं । सनातनधर्मका
मसला तो मशहूर ही है कि जहां जहां जब जब जरूरत
होती है अवतार होते हैं । कुरानमें साफ कहा है कि “बसा
अर्सलना मिन् क़ब्लिका मिर् रसूलिन् इल्ला नूही इलैहे अन्नह्

یہاں کچھ واکبوں کو کہتا ہوں—

ہیسن ادم بتشچہدم یہیہدم یہ ادم سوہم
ہو اسمما تہرسمماچچہ پرستم پر پدے مہہشورم *

”دیہو دیوالیہ پروتکے“—”ہوہم“—”سروم کہل اہم برہم تہلن“
”تہہ تاٹاسک کلچس“—”ایکمیواہریتم“—”وہہ تو میٹم تہٹم کھاٹام“—
”ایکو دیوہ سرو بہرٹیشک کرکا سور ویاپی سرو بہرٹاقتراٹما“—”سا وا اہٹا
آٹما ہرہی“—”ہرہیتتر جیوتک پرشک“ ”ید ید وبہرٹما ستوم.....
مم تیجوتنش سمہدم“—”برہمہ دہہ سروان ٹامان سروان روہان سروان
کومان وبہرٹی“—”سرواٹہہ“—ایٹیادی—

یہہ پرماتما سب کے ہرہے میں موجود ہے اسی بات کو قرآن کا
حوالہ دیکر صوفیوں نے کہا ہے—

باجودیکہ مژدہ قبرا ”نسی و اقرب“ صفتہ قرآن میں لکھا تھا
مجھے معلوم نہ تھا *

اوتار-مسیح-رسول

اسلامی کلمہ کا جو دوسرا جز ہے یعنی ”مصدق رسول اللہ“ اسکا
ارتھہ اکر یہہ کیا جاوے یعنی ”یکم از رسولان اللہ“ تو کسی دوسرے
دھرم والے کو بھی اس سے انکار نہیں ہو سکتا—قرآن کا بھی یہی
منشا ہے—پھر پھر کہا ہے ”و لکک قوم ہاہ“—سب قوموں کے لئے
ہدایت کرنے والے بھیجے گئے ہیں—”لا تفرق بین احد من رسلہ“—یعنی
رسولوں میں فرق نہیں ہے—سب برابر ہیں—سناتن دھرم کا مسئلہ تو مشہور
ہی ہے—کہ جہاں جہاں جب جب ضرورت ہوتی ہے اوتار ہوتے ہیں—
قرآن میں صاف کہا ہے کہ ”وما ارسلنا من قبلک من رسول الا نوحی الیہ الٰہا

ला इलाहा इल्ला अना फ़अबुदून्”, यानी “परमात्मा कहता है कि मैं परमात्मा ने जिस जिस रसूलको, सदेश लेजाने वालेको दुनियामें भेजा, सबको सिर्फ़ एक ही बात सिखाने को भेजा, यानी यह कि सिवा मेरे, सिवा मैंके, सिवा आत्माके, सिवा परमात्माके, जो सब जीवोंके भीतर मैं की शकलसे, चेतनाकी जान की, सूरतसे, बठा हुआ है, उसके सिवा कोई दूसरा खुदा, दूसरी हस्ती, दूसरा सत् पदार्थ ही नहीं है, और इसलिये उसी परमात्माकी, मैंकी, मेरी ही पूजा करो” ।

खुदा और खुदी ।

“फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का” । एक आदमी अल्ला, खुदा, रब्ब, कहता है । एक आदमी आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म कहता है । और महज नामके फ़र्कसे दिलोंमें फ़र्क हो जाता है, फ़िर्का बनती होती है, मारपीट होती है । खुदाको खुदी ढांक लेती है । फ़रिश्ते पर शैतान ग़ालिब हो जाता है । देवताको दैत्य दबा देता है ।

हकीक़त, तरीक़त, शरीय़त ।

अगर हम थोड़ा भी गौर करें तो हमको मालूम हो जाय कि उसूलो अक़ायद यानी ज्ञानकांड और हकीक़तकी बातें तो सब मजहबोंमें एक हैं ही, इबादात यानी भक्तिकांड और तरीक़तकी बातें भी एक ही हैं, और मामिलात यानी कर्मकाण्ड या शरीय़तकी ऊपरी सतही बातें भी एक हैं, या एक नहीं तो एक सी जरूर हैं । और जब यह मालूम हो जाय तब हमारे दिलोंसे यह तास्सुब, यह हठ, यह दुराग्रह जरूर दूर हो जाय कि हमारी ही नक़ल सारी दुनिया करे ।

”اللا الا انا فمیدون“ - یعنی ”پرماٹما کہتا ہے کہ میں پرماٹما نے جس جس رسول کو - سندیس لے جائیوالے کر دنیا میں بھیجا - سب کو سوا ایک ہی بات سکھانے کو بھیجا - یعنی بھکے کا سوا میرے - سوا میں کے - سوا آتما ہے - سوا پرماٹما کے - جو سب جیورس کے بدھتر میں کی شکل ہے - جیتنا کی جان کی صورت سے بیٹھا ہوا ہے - اُسکے سوا کوئی دوسرا خدا - دوسری ہستی - دوسرا ست پدارتھ ہی نہیں ہے - اور اس لئے اسی پرماٹما کی - میں کی - میری ہی پوجا کرو“ *

خدا اور خودی

”قط تفاوت ہے نام ہی کا“ - ایک آدمی اللہ-خدا-رب کہتا ہے - ایک آہمی آتما - پرماٹما - ایشور و برہم کہتا ہے - اور مصغر - نام کے فرق سے دلوں میں فرق ہو جاتا ہے - فرقہ بندی ہوتی ہے - مارپیٹ ہوتی ہے - خدا کو خودی کھانک لہتی ہے - فرشتے پر شیطان غالب ہو جاتا ہے - دیوتا کو دیتیکہ دبا لیتا ہے *

حقیقت - طریقت - شریعت

اگر ہم تھوڑا ہی غور کریں تو ہم کو معلوم ہو جائے گا کہ اصولی عقائد یعنی گیان کاٹھ اور حقیقت کی باتیں تو سب مذہبوں میں ایک ہیں ہی - معادات یعنی بھکتی کاٹھ اور طریقت کی باتیں بھی ایک ہی ہیں - اور معاملات یعنی کرم کاٹھ یا شریعت کی اوڑھی سطحی باتیں بھی ایک ہیں - یا ایک نہیں تو ایک سی ضرور ہیں - اور جب یہ معلوم ہو جائے تو ہمارے دلوں سے یہ تصور - یہ فکر - یہ سوچہ ضرور اور ہو جائے گا ہماری ہی نقل ساری دنیا کرے *

कोई नमाजके नामसे, कोई सन्ध्याके नामसे, कोई “प्रेयर” के नामसे, उसी एक परमात्मा, अल्ला, ‘गाड’ की याद करते हैं। कोई निन्नानवे नाम तस्वीह पर जपते हैं, कोई एक सौ आठ नाम माला पर, कोई दूसरी जबानमें उसीके नाम “रोज़री” पर। कोई रसूल पैगम्बरके नामसे, कोई मसीहाके नामसे, कोई अवतारके नामसे, उन अच्छे इन्सानोंको ताज़ीम आदर पूजाके भावसे याद करते हैं, उनकी स्तुति और “नात” करते हैं, जिन्होंने अपने अपने समयमें आदमियोंका बहुत बड़ा भला करने का जतन किया, उनकी दुनिया और आकबत बनानेकी कोशिश की, और उनके दिलोंको बदीसे हटाकर नेकीकी तरफ लगानेकी फि़क्र की। जब जब जहां जहां जिस जिस कौममें बदी बढ़ती है, शैतानका जोर ज्यादा होता है, नेकी घटती है, फरिश्ते कमजोर हो जाते हैं, वहां वहां फिरसे धर्म मज़हबको कायम और मजबूत करनेके लिये, और अधर्मको और असुरोंको दबानेके लिये (अस्ल असुर तो अहंकार काम क्रोध लोभ आदि है) परमात्माकी ओरसे कहिये, उस कौमकी रूहमेंसे कहिये, (क्योंकि वह रूह भी खुदाका नूर ही है), रसूल और मसीहा और अवतार पैदा होते हैं, जो उस कौमके क़लब अर्थात् हृदयको अपने क़लबके नमूनेके जोरसे बदल देते हैं।

यह बात सभी मज़हबवाले मानते हैं कि खुदा है। सबसे बड़ा खुदा, अल्लाह अकबर, महा-देव, एक है, वाहिद है, अद्वितीय है—यह भी सब मानते हैं। पुण्यका फल सुख, पापका फल दुःख, जैसा करो वैसा भरो, सच्चा-जच्चा, स्वर्ग-नरक, जन्नत-जहन्नुम, हेवन-हेल, यह भी सब मानते हैं। रोज़ा-व्रत-उपवास-फास्ट, हज-तीर्थ यात्रा-पिल्ग्रिमेज, और ज़कात यानी धर्मार्थ दान—यह भी सब मज़हबोंमें है। अगर एक मज़हबवाले ओम् कहते हैं तो दूसरे आमीं, और तीसरे एमेन,

دھرمون میں سمانتا-

کوئی نماز کے نام ہے۔ کوئی سندھیا کے نام ہے۔ کوئی ”پریتر“ کے نام ہے۔ کسی ایک پرماتما-اللہ (کا) کی یاد کرتے ہیں۔ کوئی ۹۹ نام تسبیح پر جپتے ہیں۔ کوئی ۱۰۸ نام مالا پر۔ کوئی دوسری زبان میں اُسکے نام ”روزری“ پر۔ کوئی رسول پیغمبر کے نام ہے۔ کوئی مسیحا کے نام ہے۔ کوئی اوتار کے نام ہے۔ اُن اچھے انسانوں کو تعظیم آور پوجا کے بہاو سے یاد کرتے ہیں۔ انکی استتی اور نصرت کرتے ہیں جنہوں نے اپنے اپنے سے میں آدمیوں کا بہت بڑا بہلا کرنے کا جتن کیا۔ ان کی دنیا اور عاقبت بنانے کی کوشش کی۔ اور ان کے دلوں کو بدی سے ہٹا کر نیکی کی طرف لگانے کی فکر کی۔ جب جب جہان جہان جس جس قوم میں بدی بڑھتی ہے۔ شیطان کا زور زیادہ ہوتا ہے۔ نیکی گھٹتی ہے۔ فرشتے کمزور ہو جاتے ہیں۔ وہاں وہاں پھر سے دھرم۔ مذہب کو قائم اور مضبوط کرنے کے لئے۔ ادھرم کو اور اسروں کو دبانے کے لئے (اصل اسروں اہتکار۔ کام۔ کردھم۔ لوبھہ آدھیں)۔ پرماتما کی اور سے کہتے۔ اس قوم کی روح میں سے کہتے۔ (کیونکہ وہ روح بھی خدا کا نور ہی ہے) رسول اور۔ مسیحا اور اوتار پیدا ہوتے ہیں۔ جو اس قوم کے قلب ارتعاش ہوئے۔ کو اپنے قلب کے نمونہ کے زور سے بدل دیتے ہیں۔

یہاں بات سبھی مذہب والے مانتے ہیں کہ خدا ہے۔ سب سے بڑا خدا۔ اللہ اکبر۔ مہادیو۔ ایک ہے۔ واحد ہے۔ افریتینہ ہے۔ یہاں بھی سب مانتے ہیں۔ پختیہ کا پہلا سکھ۔ پاپ کا پہلا دھمک۔ جیسا کر ویسا بہرو۔ سزا جزا۔ سوزگ ترک۔ جنت جہنم۔ ہیروں ہل۔ یہاں بھی سب مانتے ہیں۔ روزہ۔ برت۔ آپواس۔ فاسٹ۔ حج۔ تیرتھہ یاترا۔ پلگریمج اور زکوٰۃ یعنی دھرمارتھہ دان۔ یہاں بھی سب منہیوں میں ہے۔ اگر ایک مذہب والے آدمی کہتے ہیں۔ تو دسویں آدمی۔ اور تیسرے آدمی۔

और तीनों एक ही चीज हैं और एक ही मतलब रखते हैं। हिन्दू लोग धर्मके चार मूल, चार जड़ बुनियाद, मानते हैं, श्रुति, स्मृति, सदाचार, और “स्वस्थ च प्रियमात्मनः”, या “आत्मनश्चैव संतोषः”, या “हृदयाभ्यनुज्ञा”। मुसल्मान लोग भी मजहबकी बुनियाद चार ही मानते हैं, जो कंरोब करीब यही चीज हैं, यानी, कुरान, हदीस, इज्मा, और कयास।

रस्म-रिवाजकी समानता।

ऊपरी रस्मों और कर्मोंमें भी बहुत सदृशता मुशाबिहत है। कोई हिलाल और तारा टोपियोंमें लगाते हैं, कोई त्रिपुण्ड्र उध्व पुण्ड्र वगैरः, जो भी हिलाल और तारेकी ही दूसरी शकलें हैं, पेशानी पर चन्दन वगैरः से बना लेते हैं। कोई सलीबकी शकलके आवेजे कपड़ों पर लटकाते हैं, जो भी स्वस्तिका और त्रिपुण्ड्र से मिलते हैं। त्रिशूलकी शकलमें यह सब शकलें शामिल हैं। कोई सिरपर बाल बढ़ाते हैं, कोई ठुड्ठीपर। कोई जनेऊ और जन्तर (यज्ञोपवीत और यन्त्र) पहिन्ते हैं, कोई ताबीज। कोई बुतपरस्त हैं तो कोई कब्रपरस्त। निराकारता और एकता और बहदतके महावाक्य और कलमें पढ़ते हुए भी सभी, उस एक अकेलेपर देर तक मन न जमा सकनेके सबबसे, शकल और नामरूपवाली चीजों में मन अंटकाते ही हैं। “द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्त्तं चैवामूर्त्तच”, यानी परमात्मा अल्लाकी दो शकलें हैं, एक बेशकल और एक बाशकल, और सारी दुनिया ही यह दूसरी शकल है। इसलिये कोई मूर्तियोंकी पूजा करते हैं, कोई शहीदों, पीरों, औलियोंकी कब्रोंपर माला फूल चादर चढ़ाते हैं और दीये जलाते हैं। जिन्हीं जीवोंको कोई देवता और दैत्यके नामसे पुकारते हैं, उन्हींको दूसरे फरिश्ते, मलायक, शैतान जिन्नात, “एंजल्स्”, “केयरीज्”, वगैरः के नामसे जानते मानते हैं। कोई देवी देवताओंकी सबारी निकालते हैं, तो दूसरे ताजिये निकालते हैं;

تینوں ایک ہی چیز ہیں اور ایک ہی مطلب رکھتے ہیں — ہندو لوگ
 ہوم کے چار مول - چار جز بنیاد - مانتے ہیں — شرقی - سمرتی - سدا چار -
 اور ”سوسیہ چہ پریہانمہ“ — ”یا آتمشچیو ستوشہ“ — یا ”ہردیا
 بھینوکیا“ — مسلمان لوگ بھی مذہب کی بنیاد چار ہی مانتے ہیں -
 جو قریب قریب یہی چیز ہیں — یعنی قرآن - حدیث - إجماع - اور
 قیاس —

دسم و دواج کی سمانتا-

اوپری دسوں اور کوسوں میں بھی بہت سدرشتا مشابہت ہے — کوئی
 ہلال اور قارا ٹوپیریں میں لگاتے ہیں - کوئی توپنتر - آردھو پنتر وغیرہ - حر
 بھی ہلال اور قارے کی ہی دوسری شکلیں ہیں - پیشانی پر چندن وغیرہ سے بنا
 لیتے ہیں — کوئی صلیب کی شکل کے آویزے کپڑوں پر لگاتے ہیں - حر بھی
 سوسنکا اور توپنتر سے ملتے ہیں — ترشوں کی شکل میں بھلا سب شکلیں
 شامل ہیں — کوئی سر پر بال بڑھاتے ہیں - کوئی ٹھٹھی پر — کوئی حنیر اور
 جلتھر (یگیرویت اور پنتر) پہنتے ہیں - کوئی قعوین — کوئی بت پرست ہے تو
 کوئی قبر پرست — نرا کارتا اور ایکتا اور وحدت کے مہاراکش اور کلیے پڑھتے
 ہوئے بھی سبھی - اس ایک اکیلے پر دیر تک من لگا جما سکنے کے سبب سے - شکل
 اور نام روپ والی چیزوں میں من اتکاتے ہی ہیں — ”دویراو برہمنو روپے مور-
 تچھیروامورتچھا“ — یعنی پرمانما اللہ کی دو شکلیں ہیں - ایک بے شکل
 اور ایک با شکل - اور ساری دنیا ہی بھلا دوسری شکل ہے — اس لئے کوئی
 مورتیوں کی پوجا کرتے ہیں - کوئی شہیدوں - پیروں - اولیوں کی قبروں پر
 مالا پھول چادر چڑھاتے ہیں اور دے جلاتے ہیں — جنہیں حیدروں کو کوئی
 دیوتا اور دیتیکہ کے نام سے پکارتے ہیں - انہیں کو دوسرے ٹرہتہ - ملائکہ -
 شیطان - جنات - ”انجس“ — ”فیریز“ وغیرہ کے نام سے جانتے مانتے ہیں —
 کوئی دیوی - دیوتاؤں کی سواہی نکالتے ہیں - تو دوسرے تعزیے نکالتے ہیں —

और ताजियों पर अर्जियां लटकाते हैं। सभी मन्त्रों मानते हैं। सभी मन्त्र फूकमें विश्वास करते हैं। सभी गुरु-शिष्य, पीरसुरीद, सेंट-बिसा इष्ट के रिश्तेको मानते हैं। अगर एक मजहबवाले श्राद्ध तर्पण ब्रह्मभोज वगैरह करते हैं, तो दूसरे मजहब वाले भी गुजरे हुओंके लिये चेहलूम पर फातिहा पढ़ते हैं, और बारे-बफात और शबि-बरात पर उनकी रूहकी भलाईके लिये गरीबोंको खाना खिलाते हैं। खुदाको लामकान और निराकार कहते हुए भी सभी उसके लिए खास खास मकान बनाते हैं, मन्दिरके नामसे, मसजिदके नामसे, चर्चके नामसे। बैतुल्ला, देवालय, "हौस आफ् गाड्"—इन तीनों नामोंके ईलक्जी मानी भी एक ही हैं, अर्थात् ईश्वरका घर। और इन सब मकानोंकी शकलमें भी कुछ समानता, कुछ मशा-बिहत, होती है। यानी आस्मानकी तरफ सभी उठना चाहते हैं, शिखरके नामसे, गोपुर और कलशके नामसे, गुम्बद् और मुनारे, के नामसे, और स्टीप्ल, टावर, स्पायरके नामसे। अगर हिन्दुओंमें विश्वनाथ-दर्शन और गङ्गास्नानकी महिमा है, तो मुसलमानोंमें काबेके मन्दिरमें जाना और जाम्-जाम् कुण्डमें स्नान करना बड़ा पुण्य है। और मुशाहिबत देखिये। काबेके मन्दिरके अन्दर दो पत्थर हैं, एकका नाम हजुल अरवद् और एकका नाम हजुल यमानी, जो अब दीवारमें लगाये हैं कहा जाता है कि पहिले फर्श पर ही थे। हाजी यात्री लोग इन पर बोसा देते हैं, और काबेके मन्दिरकी परिक्रमा सात बार करते हैं, और उसके आगे सहनमें दण्डवत् करते हैं। और यह सब काम अङ्गा पैजामा कुर्ता टोपी वगैरा पहिन कर नहीं किया जा सकता, बल्कि नंगे सिर, नंगे पैर, एक धोती और एक उपर्नाही पहिन कर जिनको एहाम कहते हैं, और ये बिना सिलाईके होने चाहियें। जैसे हिन्दुओंमें जो लोग बहुत पवित्रता चाहते हैं वे स्नान करके रेशमी पीताम्बर उपर्ना पहिन कर मन्दिर-यात्रा, देवता-दर्शन, आदि करते हैं, और ये भी बिना सिलाईके, "अहते वाससी" होने चाहियें। सभी पोथी परस्त हैं

اور مٹھریوں پر مرغیاں لٹکاتے ہیں۔ سبھی مٹھیاں مالتے ہیں۔ سبھی جھار
 پھونک میں رشواس کرتے ہیں۔ سبھی گزرو ششیہ۔ پیر مرید۔ سیفقا یسافیل۔
 کھ رھتوں کو مالتے ہیں۔ اگر ایک مذہب والے شرادھہ کرپن برہم بھوج
 وغیرہ کرتے ہیں۔ تو دوسرے مذہب والے بھی گذرے ہروں کے لئے جہلم پر
 لٹا کھ پڑھتے ہیں۔ اور بارہ رفات اور شب برات پر اُنکی روح کی
 پہلانی کے لئے فریدوں کو کھانا کھلاتے ہیں۔ خدا کو لامکان اور نراکار
 کہتے ہوئے بھی سبھی اسکے لئے خاص خاص مکان بناتے ہیں۔ مندر کے
 قلم سے۔ مسجد کے نام سے۔ چرچ کے نام سے۔ بیت اللہ۔ دیوالے۔
 ”ہاوس آت گاٹہ“۔ ان تیلوں ناموں کے لفظی معنی بھی ایک ہی ہیں۔
 ارتھات ایشور کا گھر۔ اور ان سب مکاؤں کی شکل میں بھی کچھ سائقا۔
 کچھ مشابہت ہوتی ہے۔ یعنی آسمان کی طرت سبھی اُٹھنا چاہتے ہیں۔
 شکر کے نام سے۔ کوپر اور کلس کے نام سے۔ گنبد اور منارے کے نام سے۔
 اور اسٹیل۔ تاور۔ اسپائر کے نام سے۔ اگر ہندوں میں رشونا کھ درشی
 اور گنگا اسنان کی مہما ہے۔ تو مسلمانوں میں کعبہ کے مندر میں جاکا
 اور زمزم کنتہ میں اسنان کرنا بڑا پنیہ ہے۔ اور مشابہت دیکھئے۔
 کعبہ کے مندر کے اندر دو پتھر ہیں۔ ایک کا نام حجر الاسود۔ اور ایک
 کا نام حجر الیمانی۔ جو اب دیوار میں لگے ہیں کھا جاتا ہے کد
 چیلے فرش پر ہی تھے۔ حاجی یاتری لوگ ان پر بوسہ دیتے ہیں اور
 کعبہ کے مندر کی پورکما سات بار کرتے ہیں۔ اور اُسکے آگے صحن میں
 دھنوت کرتے ہیں۔ اور یہ سب کام انگا پاجامہ کرتا ٹوپھی وغیرہ پہنکر
 نہیں کیا جا سکتا۔ بلکہ ٹنگے سر۔ ننگے پیر۔ ایک دھرتی اور ایک اُپرناہی
 پہنکر۔ جنکو احرام کہتے ہیں۔ اور یہ بٹا سلائی کے ہونے چاہئیں۔ جیسے
 ہندوں میں جو لوگ بہت پوترتا چاہتے ہیں وہ اسنان کرکے ریشمی پیتامہ
 اُپھنا پہن کر مندر یا تورا۔ دیوتا درشن۔ آد کرتے ہیں اور پیکہ بھی پکا
 سٹھی کے۔ ”اھتے واسی“ ہونے چاہئیں۔ سبھی پوتھی پرسد ہیں۔

एक वेदको पूजते हैं, एक इज्जीलको, एक कुरान को । सभी अपनी अपनी पोथियोंको एक ही नामसे पुकारते हैं—
 ब्रह्मवाक्य, गा(ड)स्पेल, कलामुल्ला, यानी ईश्वर खुदा परमात्मा
 अल्ला गाडकी कही बात । हिन्दुओंमें जैसे कथा पुराणका दस्तूर है
 वैसी ही मुसलमानोंमें मौलूद, खुतबा, वाज की चाल है । एक बुजू
 करते हैं तो दूसरे स्नान । एक आसन बिछाते हैं तो दूसरे सज्जाद ।
 एक नमाजके लिए उठने, बैठने, दण्डवत् करने के कायदे रखते हैं,
 तो दूसरे सन्ध्याके लिये सूर्योपस्थान, अङ्गन्यास, करन्यास, वगैराके ।
 नमाजमें सीने तक हाथ उठाना चाहिये कि कान तक, और सन्ध्यामें
 प्राणायामके लिये हाथ सीधे नाक तक ले जाना चाहिये, या सिरके
 चारोतरफ घुमाकर, ऐसी ऐसी बातोंपर अलग अलग फिक और
 सम्प्रदाय दोनोंमें बन गये हैं—ईसाइयोंमें बीसियों, मुसलमानोंमें
 बहत्तर, हिन्दुओंमें सैकड़ों बलिहजारा । अगर एक अज्ञानकी
 पुकारसे आदमियोंको जगाकर खुदाकी तरफ लगाते हैं, तो दूसरे
 शङ्ख घण्टासे वही काम लेते हैं । ईसाइयोंमें भी “चर्च बेल्स”
 होते हैं । अगर एक कुर्बानी करते हैं तो दूसरे भी बलिदान । दोनों
 गोश्त खाते हैं । कोई एक जानवर यानी गायका गोश्त हराम
 समझते हैं तो कोई दूसरे जानवर यानी सूवरका । अफसोस तो
 यह है कि दोनोंमें अपनी नफ्स, अपने स्वार्थ और खुदगारजी,
 अपने अहंकार, काम, क्रोध, वगैराकी कुर्बानी और “तर्कि-हैवानात,”
 मांसवर्जन, बहुत कमलोग करते हैं । दूसरोंका ही बलिदान करते हैं ।
 अपने भीतर जो जानवर और पशुता है उनका नहीं । पर खुराकीकी
 बात है कि गुनाह, पाप, “सिन्” के धोने और मिटानेके लिये
 भी सभी एक ही उपाय करते हैं, पश्चात्ताप-प्रख्यापन प्रायश्चित्त,
 नदम एतराफ-तलाफी (कफ़ारा, तौबा), “रिपेंट्स-कन्फेशन-
 एक्सपिबेशन” ।

पुनर्जन्मके बारेमें भी यह खयाल करने की बात है कि कुरान

ایک وید کو پوچتے ہیں۔ ایک انجیل کو۔ ایک قرآن کو۔ سبھی اپنی اپنی پوتھیوں کو ایک ہی نام سے پکارتے ہیں۔ برہم واکیدہ - گا (۴) سہل - کلام اللہ - یعنی ایشور خدا پر ماتما اللہ گا کہی کہی بات — ہندؤں میں جیسے کتھا پڑان کا دستور ہے ویسا ہی مسلمانوں میں مولود - خطبہ - وعظ کی چال ہے۔ ایک وضو کرتے ہیں تو دوسرے اسنان — ایدہ آسن بچھاتے ہیں تو دوسرے سجادہ — ایک نماز کے لئے اُٹھتے - بیٹھتے - دُختوت کرنے کے قاعدے رکھتے ہیں - تو دوسرے سندھیا کے لئے سورہ یوستہان - انگلیاس - کرنیاس وغیرہ کے — نماز میں سینکڑوں تک ہاتھ اُٹھانا چاہئے کلا کان تک - اور سندھیا میں پڑانا یام کے لئے ہاتھ سیدھے ناک تک لے جانا چاہئے۔ یا سر کے چاروں طرف گھما کر - ایسی ایسی باتوں پر الگ الگ فرقے اور سمپردائے دونوں میں بن گئے ہیں۔ عیسائیوں میں بیسیوں - مسلمانوں میں بہتر - ہندؤں میں سینکڑوں بلکہ ہزاروں — اگر ایک اذان کی پکار سے آدمیوں کو جگا کر خدا کی طرف لگاتے ہیں - تو دوسرے شتھکھ گھنٹکھ سے وہی کام لیتے ہیں۔ عیسائیوں میں بھی ”چرچ بلس“ ہوتے ہیں۔ اگر ایک قربانی کرتے ہیں - تو دوسرے بھی بلدان — دونوں گوشت کھاتے ہیں۔ کوئی ایک جانور یعنی گائے کا گوشت حرام سمجھتے ہیں۔ تو کوئی دوسرے جانور یعنی سور کا — افسوس تو یہ ہے کہ دونوں میں اپنی نفس - اپنے سوارتھ اور خود غرضی - اپنے اہتکار - کام - کردہہ وغیرہ کی قربانی اور ”ترک حیوانات“ - مانس ررجی - بہت کم لوگ کرتے ہیں۔ دوسروں کا ہی بلدان کرتے ہیں۔ اپنے بھیتر جو جانور اور پشوتا ہیں اُنکا نہیں۔ پر خوشی کی بات ہے کہ گڈا - پاپ - ”سی“ کے دھرنے اور مٹانے کے لئے سبھی ایک ہی اُپایے کرتے ہیں۔ پشچاتاپ - پرکھیاؤں - پریشپتھ - قدم - اعتراؤں - نلائی - (نفاہ - توبہ) - رپنتنس - کنٹشن - اِکس پیٹشن *

پنرجنم کے بارے میں بھی یہ خیال کرنے کی بات ہے کہ قرآن

या हदीसमें कहीं इससे इनकार नहीं किया है। बल्कि कुछ कलाम ऐसे मिलते हैं जिनका इशारा कुछ लोगों की समझ में पुनर्जन्मके मानने की तरफ है। 'कुल् योह्यी हल्लजी अन्शाअहा अव्वलमरी' यानी जिसने पहिले तुमको जिलाया है वही तुमको दुबारा भी जिला सकता है। "कैफा तकफुरुना बिल्लाहे व कुंतुम् अम्बातन् फा अह्यकुम् सुम्मा युमीतोकुम् सुम्मा योह्यिकुम् सुम्मा इलैहे तर्ज-ऊन्" यानी तुम अल्ला से किस तरह इन्कार कर सकते हो, हालां कि तुम बेजान थे, उसने तुम्हें जिन्दा किया, और फिर तुम्हें मारेगा, और फिर जिलायेगा, और फिर उसकी तरफ लौट कर जाओगे। यह बात गीता की सी ही मालूम होती है,

बहूनां जन्मनामंते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते ।

यानी बहुत जन्मोंके बाद ज्ञान मारिफत पाकर आदमी मेरे पास, परमात्माके पास पहुँच जाता है।

कुछ लोग कुरान की इन बातोंके मानी दूसरी तरह लगाते हैं। पर इसमें तो कोई शक है ही नहीं कि खलीफा हारूरशीदके जमानेके मोतखिला फिकेके लोग पुनर्जन्म को मानते थे। अल् गिज्जाली बगैरा और सूफी लोग भी इसमें एतबार (विश्वास) करते थे। मौलाना रुमका कहना तो मशहूर है,

हम् चो सब्ज़ा बारहा रोईदः अम् ।

हप्त सद् हप्तताद् क़ालिब दीदः अम् ।

यानी घासके ऐसा मैं फिर फिर उगा हूँ, सात सौ सत्तर जिस्म मैंने देखे हैं। ईसा मसीह ने भी एक मौके पर कहा कि जो इलैजा नामका नबी था वही जान दी बाप्टिस्ट नामका फकीर के रूपमें फिर जन्मा है। आगा खाँ के फिकेके मुसल्मान भी तनासिख यानी पुनर्जन्म को मानते हैं ।

یا حدیث میں نہیں اس سے انکار نہیں کیا ہے۔ بلکہ کچھ کلمہ ایسے ملتے ہیں جس کا اشارہ کچھ لوگوں کی سمجھ میں پانچم کے مافقہ کی طرف ہے۔ ”قل یحییٰ بالیٰ انشاہا اولیٰ مرة“۔ یعنی جس نے پہلے تم کو جلایا ہے وہی تم کو دوبارہ بھی جلا سکتا ہے۔ ”کیف تکفرون باللہ و کلتم امواتاً فاحیاکم ثم یمیتکم ثم یمیتکم ثم الیہ ترجعون“۔ یعنی تم اللہ سے کس طرح انکار کر سکتے ہو۔ حالانکہ تم یبجائے تھے۔ اس نے تمہیں زندہ کیا۔ اور پھر تمہیں ماریگا۔ اور پھر جلائیگا۔ اور پھر اسکی طرف لوٹ کر جاؤ گے۔ یہاں بات کیتا کی سی ہی معلوم ہوتی ہے۔

بہونام جلسنام ملتے گھان وان مام پر پدیجے۔

یعنی بہت جنموں کے بعد گیان معرفت پاکو آدمی مڑے پاس۔ پرماتما کے پاس پہونچ جاتا ہے *

کچھ لوگ قرآن کی ان باتوں کے معنی دوسری طرح لگاتے ہیں۔ پر اس میں تو کوئی شک ہے ہی نہیں کلا خلیفہ ہارون رشید کے زمانہ کے معزولہ فرقہ کے لوگ پانچم کو مانتے تھے۔ الغزالی وغیرہ اور صوفی لوگ بھی اس میں اختیار (وشواس) کرتے تھے۔ مولانا روم کا کہنا تو مشہور ہے۔

ہمچو سبزہ بارہا رونوختہ ام

ہفت صد ہزار قالب دیدہ ام۔

یعنی گھاس کے ایسا میں پھر پھر اُگا ہوں۔ سات سو ستو جسم میں نے دیکھے ہیں۔ عین مسیح نے بھی ایک موقع پر کہا کلا جو الیچا نام کا قبی تھا وہی جان دی باپتسٹ نام کا فقیر کے روپ میں پھر جنما ہے۔ آغا خان کے فرقہ کے مسلمان بھی قلاسے یعنی پانچم کو مانتے ہیں *

मुख्तसर यह कि अगर “चश्मानि दिल” से, मुहब्बत और नेकीकी आंखसे, देखिये, तो आपको सब एक ही और एकसे ही देख पड़ेंगे, सब दोस्त ही दोस्त देख पड़ेंगे, और सबकी दुनिया भी और सबकी आकबत भी बनैगी। लेकिन अगर खुदी और शेखी-मशीखत, घमंड, हठ, दुराग्रह, तास्सुबकी और अहमहमिका यानी हमहमाकी, आंखोंसे देखियेगा, और इसी भूलमें संस्त रहियेगा कि मेरा मजहब सबसे अच्छा और बाकी सब खराब हैं, और दूसरे मजहबवालोंको जैसे हो तैसे, अकल और हिकमतसे न बन पड़े ताजबर्दस्तीसे, अपने मजहबमें लाना चाहिये, अगर हम लोग ऐसा खयाल करेंगे तो दूसरोंका भी और खाहमखाह अपना भी काम बिगाड़ेंगे।

अस्ल बात यह जान पड़ती है कि, पढ़े लिखे या अनपढ़ भी जब साफ साफ यह कहते शमाते हैं कि हम दूसरों से अच्छे हैं, पर अहंकार भी उनका साथ ही जोर करता ही है, तब उस अहंकार गुरूरका इस बहानेसे स्वाद जायका लेते हैं कि हमारा ईश्वर, हमारा अल्ला, हमारा यहोवा, हमारा गाड्, सब दूसरोंके देवतासे बड़ा है, हमारी पोथी, वेद, या, तोरेत, या इंजील, या कुरान, और सब दूसरी पोथियों से उमदा है, हमारा अवतार पूर्ण परमात्मा है, हमारा मसीहा खुदा का इकलौता बेटा है, हमारा नबी ख़ालिमुन्नबूअत है। भाइयो, दोस्तो, हम लोगोंको इस अहंकार और गुरूर के धोखेमें नहीं पड़ना चाहिये। परमात्मा खुदा अल्ला अनंत, ला-इन्तिहा, “अनएंडिंग” है, और वही हमारी आपसकी रूह है। इसमेंसे अनगिनत अवतार और मसीह और रसूल आये, आ रहे हैं, और आते रहेंगे। अपने अपने देश और जमाने के लिये सबने अच्छी अच्छी बात सिखायी और सिखा रहे हैं और सिखावेंगे। सब को मुनासिब इज्जत आदर करना चाहिये। और यह कभी खयाल में नहीं लाना चाहिये कि जो किसी एक ने कोई खास तरीका किसी देश कालके लिये बताया, वही जबर्दस्तीसे सब आदमियोंसे सब जगह सब हालतों में मनवाया जाय और बाकी सबकी बातें मिटा दी जाय।

مختصر یہ کہ اگر چشمانِ دل سے - محبت اور نیکی کی آنکھ سے دیکھئے تو آپ کو سب ایک ہی اور ایک سے ہی دیکھ پڑینگے۔ سب دوست ہی دوست دیکھ پڑینگے۔ اور سب کی دنیا بھی اور سب کی عاقبت بھی یونگی۔ لیکن اگر خروہی اور شیطانی - مشیض - کھنڈ - ہک - ہراکے - قصب کی اور اہمیتا یعنی ہمت کی - آنکھوں سے دیکھینگا اور اسی بھول میں مست رہینگا کہ میرا مذہب سب سے اچھا اور باقی سب خراب ہیں۔ اور دوسرے مذہب والوں کو جیسے ہو تیسے - عقل اور حکمت سے نکال دیں۔ تو زبردستی سے - اپنے مذہب میں لانا چاہئے۔ اگر ہم لوگ ایسا خیال کریں تو دوسروں کا بھی اور خواہ مخواہ اپنا بھی کام بگاڑینگے *

اصل بات یہ جان پڑتی ہے - کہ پڑھے لکھے یا ان پڑھے بھی جب صاف صاف یہ کہتے شرماتے ہیں کہ ہم دوسروں سے اچھے ہیں۔ پر اہتکار بھی ان کا ساتھ ہی زور کرتا ہے۔ تپ اُس اہتکار غرور کا اُس پہانہ سے سوادِ ذائقہ لیتے ہیں کہ ہمارا ایشور - ہمارا اللہ - ہمارا پھروا - ہمارا کاہ - سب دوسروں کے دیوتا سے بڑا ہے۔ ہماری پوتھی - وید - یا توریت - یا انجیل - یا قرآن - اور سب دوسری پوتھیوں سے عمدہ ہے۔ ہمارا اوتار پورے پرماٹما ہے - ہمارا مسیحا خدا کا اِکلوتا بیٹا ہے - ہمارا نبی خاتم النبوت ہے - بھائیو - دوستو - ہم لوگوں کو اس اہتکار اور غرور کے دھوکے میں نہیں پڑنا چاہئے۔ پرماٹما خدا اللہ الہ - لا اِلهَ اِلاَّہ - ”ان اینڈنگ“ ہے اور وہی ہمارا آپ کی روح ہے۔ اس میں سے ان گنت اوتار اور مسیح اور رسول آئے۔ آدھے ہیں۔ اور آتے رہینگے۔ اپنے اپنے دیش اور زمانہ کے لئے سب نے اچھی اچھی بات سکھائی۔ اور سکھا رہے ہیں۔ اور سکھائینگے۔ سب کی مناسب عزت ادا کرنا چاہئے۔ اور یہ کہ بھی خیال میں نہیں لانا چاہئے کہ جو کسی ایک نے کوئی خاص طریقہ کسی دیش کال کے لئے بتایا - وہی زبردستی سے سب آدمیوں سے سب جگہ سب حالتوں میں منوایا جائے اور باقی سب کی باتیں مٹادی جائیں *

मजहबमें जबरदस्ती नहीं ।

ऐसी जबरदस्तीकी कार्रवाइयां चाहे थोड़े दिनके लिये कारगर हो भी जायं, पर बहुत जल्द ही ज्वाल और मुसीबत उनके करने-बालोंपर आती हैं। जो ज़ब्रसे जल्द बढ़ता है वह दूसरोंके ज़ब्रसे वैसाही जल्द घटता भी है। वजह सीधी है, उसके दुश्मनोंकी संख्या हमेशा बढ़ती रहती है जो उसका बुरा चेतते ही रहते हैं। पच्छिमकी कौमोंका हाल देखिये। इस देशमें कहावत है कि जब चींटके पर निकलते हैं तब जानना चाहिये कि उसकी मौत करीब है। और भी बड़ी मोटी बात है। धमकाकर मनका विश्वास तो बदला नहीं हो जा सकता। अगर मारपीटकर, डर दिखाकर, हम दिनके वक्त किसीसे कहलवा भी लें कि दिन नहीं रात है, तो उसका मन तो बदलेगा नहीं, झूठ बोलने की, झूठे और कायरका काम करनेकी, आदतही उसमें और उसकी नस्ल में कायम होमी। ऐसी ही बातोंका खयाल करके कुरानमें “वारम् वारम्”, बारबार, कहा भी है, “ला इफ़ाहा फ़िद् दीन” यानी मज़हबके मामिलेमें कोई ज़बरदस्ती नहीं है, “लकुम् दीलुकुम् वलेयदीम्” यानी तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन, हमारे लिये हमारा दीन, “उद् एला सबीलि रब्बका बिल् हिक्मते वल् मौएज्ज़तिल् हसनते”, यानी रब्बकी तरफ़ बुलाओ लोगों को हिक्मतकी राहसे, और अच्छी नसीहतोंसे।

कइनासे करनी बड़ी ।

सबसे उम्दा हिक्मत तो अपनी जिंदगीका नमूना है ।

“यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।”

“एकआम्पूल् टीचेज बेटर दैन प्रीसेप्ट” ।

जिसको लोग जानते हैं कि यह आदमी अच्छा है, नेकनीयत है,

مذہب میں زبردستی نہیں۔

ایسی زبردستی کی کارروائیاں چاہے تھوڑے سے بکے لئے کارگر ہو بھی جائیں۔ پر بہت جلد ہی زوال اور مصیبت اُنکے کونیوالوں پر آتی ہے۔ جو چیز سے جلد پڑھتا ہے وہ دوسروں کے چیز سے ویسا ہی جلد کھٹکتا ہے۔ روجہ سیدھی ہے۔ اُسکے دشمنوں کی سلگھیا ہیضہ پڑھتی رہتی ہے۔ جو اُسکا برا چیتے ہی رہتے ہیں۔ پیچہم کی قوموں کا حال دیکھئے۔ اُس دیس میں کھاوت ہے کہ جب چیتے کے پر لگتے ہیں تب جاننا چاہئے کہ اُسکی موت قریب ہے۔ اور بھی بڑی موتی بات ہے۔ دھنگو مس کا رشواس تو بدلا نہیں ہی جا سکتا۔ اگر مار پیٹ کر۔ تو دکھا کر۔ ہم سے کت کھی سے کھلا بھی لیں کہ میں نہیں رات ہے۔ تو اُسکا من تو ہڈیگا نہیں۔ جھوٹ بولنے کی۔ جھوٹے اور کاپر کا کلم کرلیکی۔ مانت ہی گس میں اور اُسکی نلک میں قائم ہوگی۔ ایسی ہی باتوں کا خیال کرکے قرآن میں ”وارم وارم“ بار بار کہا بھی ہے۔ ”اگر اے فی الدین“ یعنی مذہب کے معاملہ میں کوئی زبردستی نہیں ہے۔ ”لکم دینکم و لی دینکم“ یعنی تمہارے لئے تمہارا دین۔ ہمارے لئے ہمارا دین۔ ”ادع الی سبیلک وہی بالصلوۃ و البرعۃ الحسنۃ“۔ یعنی رب کی طرت بلو لوگوں کو حکمت کی وقت ہے۔ اور اچھی نصیحتوں سے *

کہنی سے کرنی بڑی ۱۹۹۳

سب سے صدہ حکمت تو اپنی زندگی کا ثبوت ہے۔

۹۹ یاد پیدا چرتیں شریفستہ تعددیر پتروجلہ ۹۹

۹۹ اکڑامہل تہجڑ پتر دین پروسہت ۹۹

جس کو لوگ جانتے ہیں کہ یہ آدمی اچھا ہے۔ نیک نیت ہے۔

सच बोलता है, धोखा नहीं देता, दूसरोंका दिलसे भला चाहता है, उसकी शिक्षाको सभी बातोंमें लोग मानने लगते हैं। पैगम्बर मुहम्मदको उनके जान पहिचानके आदमी 'अल् अमीन' यानी विश्वासपात्र कहके पुकारते थे। इससे बढ़कर दूसरा खिताब हो नहीं सकता। आज भी यही अपनी आंखोंके सामने देख लीजिये, गांधीजीको उनके दुश्मन भी अच्छा ही कहते हैं। अपनी जिदगी, अपनी रहन सहन, अपने चाल चलनकी खूबीसे ही अपने धर्मका प्रचार करना—यह सबसे अच्छा तरीका है। गांधीकी दूकानके लिये इतिहास और अड्वरटिजमेंटकी जरूरत नहीं है, उसकी खुशबू ही सबको खींचती है। उमदा मिठाईकी दूकानपर लड़को को जबरदस्ती नहीं ले जाना पड़ता। हां, दूकानदार ऐसा बेतमीज भी न होना चाहिये कि जो कोई सौदा खरीदने आवे उसको दुत्कार दे। कोई मजहबवाले एक गलती करते हैं, तो कोई दूसरी—जैसा कि सब जानते हैं, हिंदू धर्मवालोंने अपने ऊपर भारी जवाब और मुसीबत खास कर दूसरी बड़ी भूलकी वजहसे बुलायी है। सब मजहबोंको सिर्फ अपनी दूकान खुली रखनी चाहिये, और सौदा उमदा रखना चाहिये। अपनी अपनी पसंदके मुताबिक लोग आपही लेने आबेंगे।

मजहब नहीं इन्सानियत फैलाइये ।

यह खयाल कि हमारा मजहब फैलने से हमारी क़ौम मजबूत हो जायगी—यह भी एक बड़ी झूठी माया है। इतिहास तबारीख के एक एक पन्नेसे मालूम होता है, और आज अपनी आंखोंके सामने दिखाई देता है, कि हिंदू राजा हिंदू राजासे, ईसाई क़ौमोंसे, ईसाई क़ौमोंसे, मुसलमान राजा और क़ौमोंसे मुसलमान राजा और क़ौमोंसे, वैसा ही बल्कि उससे ज्यादा, लड़ते आये और लड़ते जाते हैं जितना दूसरे मजहब वालोंसे। किसी मजहब

سج بولتا ہے۔ دھرم کا نہیں دیتا۔ دوسروں کا دل سے بہا چاہتا ہے۔ اُسکی شکشا کو بھی باتوں میں لوگ مائلے لگتے ہیں۔ پیغمبرِ مصدق کو اُنکے جان پہچان کے آدمی 'آلامیں' یعنی وہواس پاتر کہتے پکارتے تھے۔ اس سے پڑھکر دوسرا خطاب ہو نہیں سکتا۔ آج بھی اپنی آنکھوں کے سامنے دیکھا لیجئے۔ گاندھی جی کو اُن کے دشمن بھی اچھا ہی کہتے ہیں۔ اپنی زندگی۔ اپنی رہن سہن۔ اپنے چال چلن کی غریبی سے ہی اپنے دھرم کا پرچار کرتا۔ یہ سب سے اچھا طریقہ ہے۔ گاندھی کی دکان کے لئے اشتہار اور ایڈورٹائزمنٹ کی ضرورت نہیں ہے۔ اُسکی غریب ہی سب کو کھینچتی ہے۔ مددہ مٹھائی کی دکان پر لڑکوں کو زیردستی نہیں لے جانا پڑتا۔ ہاں دکاندار ایسا بے تمیز بھی نہ ہونا چاہئے کہ جو کوئی سودا خریدنے آوے اُسکو دھکار دے۔ کوئی مذہب والے ایک غلطی کرتے ہیں تو کوئی دوسری۔ جیسا کہ سب جانتے ہیں۔ کہ ہندو دھرم والوں نے اپنے اوپر بھاری زوال اور مصیبت خاصکر دوسری بڑی بھری کی وجہ سے پلائی ہے۔ سب مذہبوں کو صون اپنی دکان کھلی رکھتی چاہئے۔ اور سودا مددہ رکھنا چاہئے۔ اپنی اپنی پسند کے مطابق لوگ آپ ہی لینے آئینگے *

مذہب نہیں انسانیت پھیلائے۔

یہ خیال کہ ہمارا مذہب پھیلنے سے ہماری قوم مضبوط ہو جائیگی۔ یہ بھی ایک بڑی جھوٹی ساریا ہے۔ اتھاس۔ تواریخ کے ایک ایک پتہ سے معلوم ہوتا ہے۔ اور آج اپنی آنکھوں کے سامنے دکھائی دیتا ہے۔ کہ ہندو راجہ ہندو راجہ ہے۔ عیسائی قومیں عیسائی قوموں سے۔ مسلمان راجہ اور قومیں مسلمان راجہ اور قوموں سے۔ ویسا ہی بلکہ اُس سے زیادہ لڑتے۔ اُنے اور لڑتے جاتے ہیں جتنا دوسرے مذہب والوں سے۔ کسی مذہب

की ऊपरी नुमाइशी दिखौआ रीति रिबाजोंके फैलनेसे कोई कौम मजबूत नहीं होती, बल्कि उस इन्सानियत, मनुष्यता, मेल-मुहब्बत, नेकी के फैलनेसे जो सब मजहबों-धर्मोंका सत्तसार है। ये ऊपरी नामरूप तो कपड़े पहिरावेकी सी बात हैं, जिसको जैसा मन भाओढ़ो छोड़ो। इनमें जबरदस्ती करना बड़ी भूल है, हां, सलाह, मशिवरा, परामर्श, शिक्षा, सभ्यतासे देना जायज है।

ज लोग अपने मजहबकी तबलीग, अपने धर्मका प्रचार, जवानसे भी करना लाजिमी ही समझें वे शाइस्तगीसे, सभ्यतासे, दलील और हिकमत और युक्तिसे, करें। अपने मजहबकी खूबियाँ, दिखावें पर दूसरे मजहबकी निंदा न करें। सब मजहबोंमें जो मुश्तरका यानी समान बातें हैं उनका ज्यादा खयाल रखें और जो खुसूसियत और विशेष और ऊपरी फरक की रीतियों रस्मोंकी बातें हैं उनकी तरफ थोड़ा कम ध्यान करें। सब आदम निकचलन होकर खुदा ईश्वरके प्यारे हो जायँ—इसकी फिक्र ज्यादा रखें। मेरी ऊठक बैठककी ही नकल सब करें—इसकी कम। अगर मुबल्लिग और प्रचारक लोग ऐसा अमल करें तो यह सब मगड़े जो आज बरपा हैं दूर हो जायँ। हिन्दुस्तानमें दुनियाके सब मजहब मौजूद हैं। अगर यहां मजहबी मेलका नमूना कायम हो जाय तो सारी दुनियामें इसका असर फले। और प्रायः मगड़ा भी सिर्फ हिन्दुओं और मुसलमानोंमें ही देख पड़ता है। यह मगड़ा तभी दूर होगा जब अपने और दूसरे दोनों मजहबोंकी अस्तियतको पहचानें, एक दूसरेके गुणोंको, खूबियोंको, ज्यादा देखें, दोषोंको, जुक़्मों को कम, और एकदूसरेको जो कुछ कहें सुनें, समझें समझावें, वह शाइस्तग शिष्टतासे।

ग्यादती हर बातमें बचाना चाहिये। धर्म-मजहबकी भी। इसमें भी जोश और ज़ोमका हमहमा सबे धर्म-मजहबके खिलाफ है।

کئی اوپری نمائشی دکھوا ریت رواجوں کے پھیلنے سے کوئی قوم مضبوط نہیں ہوتی۔ بلکہ اس انسانیت - منشیٹا - میک مصیبت - نیکی کے پھیلنے سے جو سب مذہبوں - دھرموں کا سب سار ہے — یہ اوپری نام روپ گو کہڑے پھلاوے کی سی بات ہے۔ جسکو جیسا من بہارے اوڑھو چھوڑو — نفی میں زیر ہستی کرنا پڑی بھول ہے۔ ہاں صلاح - مشورہ - پراموش شکشا سبھیتا سے دینا جائز ہے *

جو لوگ اپنے مذہب کی تبلیغ - اپنے دھرم کا پرچار - زبان سے بھی کرنا لازمی ہی سمجھیں وہ شائستگی سے - سبھیتا سے - دلیل اور حکمت اور یکتی سے کریں۔ اپنے مذہب کی خوبیاں دکھائیں۔ پر دوسرے مذہب کی ٹلدا نہ کریں۔ سب مذہبوں میں جو مشترکہ یعنی سمان باتیں ہوں انکا زیادہ خیال رکھیں اور جو خصوصیت اور ویش اور اوپری فرق کی ریتوں رسموں کی باتیں ہوں انکی طرف تھوڑا کم دھیان کریں۔ سب آدمی ٹھیک چلن ہو کر خدا ایشور کے پیارے ہوجاویں۔ اسکی فکر زیادہ رکھیں۔ میری اٹھک بیٹھک کی ہی نقل سب کریں اسکی کم۔ اگر مہلے اور پرچارک لوگ ایسا عمل کریں تو یہاں سب جھگڑے جو آج برپا ہیں دور ہوجاویں۔ ہندوستان میں دنیا کے سب مذہب موجود ہیں۔ اگر یہاں مذہبی میل کا نمونہ قائم ہو جائے تو ساری دنیا میں اسکا اثر پھیلے۔ اور پراپک جھگڑا بھی صرت ہندوں اور مسلمانوں میں ہی دیکھا پڑتا ہے۔ یہاں جھگڑا تبھی دور ہوگا جب اپنے اور دوسرے دونوں مذہبوں کی اصلیت کو پہچانیں۔ ایک دوسرے کے گلوں کو۔ خوبیوں کو۔ زیادہ دیکھیں۔ دوسروں کو۔ نقصوں کو کم۔ اور ایک دوسرے کو جو کچھ کہیں سنیں سمجھیں سمجھاویں وہ شائستگی سے۔

حشمتا سے *

زیادتی ہر بات میں بچانا چاہئے۔ دھرم مذہب کی بھی۔ اس میں بھی جوش اور کشر بھکا کا ہمہکا سچے دھرم مذہب کے خلاف ہے۔

कुरानमें कहा है—“ला तअतदू इन्ना अल्लाहा ला योहिबुल् मौतदीन्”, यानी हृद से ज्यादा बढ़नेवालोंसे अल्ला परमात्मा मुहब्बत नहीं करता। यही अर्थ संस्कृतमें भी कहा है,—“आश्रयेन् मध्यमां वृत्तिं अति सर्वत्र वर्जयेत्”, यानी बीचका रास्ता पकड़ो और अति किसी काममें मत करो। हर आदमीको मुनासिब है कि अपने मां बाप की, अपने अवतारी मसीह, रसूलकी, इज्जत करे, पर यह मुनासिब नहीं कि कोई किसीसे कहै कि तुम भी मेरे ही मां बापकी इज्जत करो, अपने मां बाप की नहीं। हां, जो सबका अव्वल् मां बाप अल्ला परमात्मा गाड् के नामसे और रूह चेतनाके रूपसे हर आदमी के भीतर बठा है उसकी पूजा दिलसे सभी को करना चाहिये।

कौन जिम्मेदार ?

इसकी जिम्मादारी, कि इस तरह पर अमल हो, धर्माचार्यों और मजहबी पेशवाओं पर है। उनका चाहिये कि मुंहदेखी बात न कहें, झूठी बदनामीको न डरें, झूठी नेकनामी और वाहवाही की लालच न करें। अपनी अपनी उम्मतोंको सच्ची सलाह दें। यह न कहें कि अभी लोग तैयार नहीं हैं, जमाना नहीं है। बुद्ध और मूसा, ईसा और मुहम्मद, कबीर और नानक, ने जमानेका इन्तिज़ार नहीं किया, लोगोंके तैयार हो जानेका आसरा नहीं देखा, बल्कि अपनी रूह, अपने इल्हाम, अपने आवेश, के जोरसे लोगोंको तैयार किया और जमानेको बनाया। और मजहबी पेशवाओं और धर्माचार्योंसे भी एक मानीमें ज्यादा जिम्मादारी जनता यानी अबाम पर है। जब नौकर हाकिम और शाह बन गये, इन्तिज़ामकी जगह नौकरशाही हो गई, तो प्रजाको ही उसको फिरसे दुरुस्त करनेकी फिक्र करनी पड़ी। प्रजाहीने उन मुन्त-जिमोंको मुकर्रर किया था जो अब बिगड़ गये। अब प्रजा ही को उन्हें फिर अपने काबूमें लाना है। इसके लिये प्रजाको अपनी बुजुर्गी पहिचानना चाहिये। तभी नौकर भी उसकी बुजुर्गीको मानेंगे। यही हालत धर्म और मजहब की है। अपनेको

قرآن میں کہا ہے۔ ”لَا تَعْتَدُوا لِلّٰہِ لَا یُعْطِی الْمَعْتَدِیْنَ“۔ یعنی حد سے زیادہ بڑھنے والوں سے اللہ پرماتما معیت نہیں کرتا۔ یہی ارتھک سنسکرت میں بھی کہا ہے۔ ”آہرئیں مدھیام ورتم اتی سووکر ورجہت“۔ یعنی بیچ کا راستہ پکڑو اور اتی کسی کام میں مت کرو۔ ہر آدمی کو مناسب ہے کہ اپنے مان باپ کی - اپنے اوقاری مسیح رسول کی - عزت کرے - ہر عورت مناسب نہیں کہ کوئی کسی سے کہے کہ تم بھی میرے ہی مان باپ کی عزت کرو - اپنے مان باپ کی نہیں۔ مان جو سب کا اول مان باپ اللہ پرماتما کاکے ناموں سے اور روح جیتنا کے روپ سے ہر آدمی کے ہیتر بیٹھا ہے اسکی پرچا دل سے سبھی کو کرنا چاہئے *

کون نامہ دار؟

اسکی نامہ داری۔ کہ اس طرح پر عمل ہو۔ دھرم چاریوں اور مذہبی پیشواؤں پر ہے۔ اکثر چاہئے کہ۔ منہ دیکھی بات نہ کہیں۔ جھوٹی بدنامی کو نہ کریں۔ جھوٹی نیکیاں اور راکہا ہی کی لالچ نہ کریں۔ اپنی اپنی امتوں کو سچی صلاح دیں۔ وہ نہ کہیں کہ ابھی لوگ تیار نہیں ہیں۔ زمانہ نہیں ہے۔ بدہ - موسیٰ - عیسیٰ - اور محمد - کبیر اور فالک نے زمانہ کا اقتدار نہیں کیا۔ لوگوں کے تیار ہو جانے کا اسرا نہیں دیکھا۔ بلکہ اپنی روح - اپنے الہام - اپنے آدیش - کے زور سے لوگوں کو تیار کیا اور زمانہ کو بٹایا۔ اور مذہبی پیشواؤں اور دھرم چاریوں سے بھی ایک معنی میں زیادہ ذمہ داری جٹنا یعنی عوام پر ہے۔ جب نوکر حاکم اور شاہ بٹگئے۔ اقتدار کی جگہ نوکر شاہی ہو گئی۔ تو پرچا کو ہی اس کو پھر سے درست کرنے کی فکر کرنی پڑی۔ پرچا ہی نے اُن منتظرین کو مقرر کیا تھا جو اب بگڑ گئے۔ اب پرچا ہی کو انہیں پھر اپنے قابو میں لانا ہے۔ اس کے لئے پرچا کو اپنی بزرگی پہچاننا چاہئے۔ تبھی نوکر بھی اسکی بزرگی کو مانیں گے۔ یہی حالت دھرم اور مذہب کی ہے۔ اپنے کو

पहिचानिये, अपनी रूहको जानिये, मजहबी स्वराज हासिल कीजिये। और यह बहुत सहज भी है, और निहायत मुश्किल भी है। पच्छिमसे पूर्वकी ओर, बाहर से भीतरकी ओर, आंख फेरनेकी बात है।

इन्सान खुद सब मजहबोंसे बड़ा है।

यहां सभी मजहबोंके मानने वाले मौजूद हैं। हर एकको इस्तिथार है कि अपने मजहबको, अपने धर्मको, जब चाहे उतार दे, और जिस दूसरे मजहब-धर्मको चाहे ओढ़ ले, जैसे ही एक ऋषिको उतार कर दूसरेको पहिन सकता है। इस छोटी सी बातको आप लोग खूब गौर कीजिये। बात सीधी है, प्रत्यक्ष है, आंखके सामने है, इसमें किसी दलीलकी जरूरत ही नहीं। इसकी तरदीद, इसका खण्डन, हो ही नहीं सकता। कैसे हो ? रोज हम लोग देखते ही हैं कि कितने ही आदमी एक धर्म छोड़ कर दूसरा धर्म उठा लेते हैं। तबलीग और प्रचारके मानी यही हैं कि लोग एक धर्मको छोड़कर दूसरे धर्मको उठा लें। पर इस बातका असली नतीजा क्या निकलता है उस पर गौर कीजिये। इसका अस्ली नतीजा यही निकलता है कि सब मजहबों और धर्मोंसे आदमी की रूह बड़ी है, वही रूह इन सब मजहबोंके बीचमें तजबीज करती है, कि कौन ज्यादा अच्छा और कौन कम अच्छा, किसको लेना चाहिये किसको छोड़ना चाहिए। सब पोथियां, वेद और ज़िद-अवस्ता, इंजील और तौरत और कुरान, सब मजहबी रहनुमा, अवतार, ऋषि, मुनि, रसूल, पैगम्बर, मसीह, नबी, सभी आप से दर्खास्त करते हैं कि मुझको मानो, मुझको मानो। आप जिसको चाहते हो मानते हो, नहीं चाहते तो नहीं मानते और अलग हटा देते हो। इससे बढ़के क्या ज्यादा सरीही सबूत चाहिये कि आदमीकी रूह इन सभी से बड़ी है। इस्लाम में बहत्तर और सनातन धर्ममें बहत्तर सौ फिरके जो पैदा हो गये हैं वे भी, खराबी करते हुए भी, इसी इन्सानी रूह की बुजुर्गी बड़प्पन के सुबूत हैं, कि आदमियों

پہچانئے۔ اپنی روح کو جانئے۔ مذہبی سوراخ حاصل کیجئے۔ اور پہلے بہت سہم بھی ہے۔ اور نہایت مشکل بھی ہے۔ پچھم سے پورب کی اور۔ باہر سے بہتر کی اور آنکھ پھیرنے کی بات ہے *

انسان خود سب مذہبوں سے بڑا ہے

ہاں سبھی مذہبوں کے ماننے والے موجود ہیں۔ ہر ایک کو اختیار ہے کہ اپنے مذہب کو۔ اپنے دھرم کو۔ جب چاہے اُتار دے اور جس دوسرے مذہب۔ دھرم کو چاہے اڑھلا لے۔ جیسے ہی ایک کپڑے کو اُتار کر دوسرے کو پہن سکتا ہے۔ اس چھوٹی سی بات کو آپ لوگ خوب غور کیجئے۔ بات سیدھی ہے۔ پرکشش ہے۔ آنکھ کے سامنے ہے۔ اس میں کسی دلیل کی ضرورت ہی نہیں۔ اسکی ترہید۔ اسکا کھلقن۔ ہو ہی نہیں سکتا۔ کیسے ہو؟ روز ہم لوگ دیکھتے ہی ہیں کہ کتنے ہی آدمی ایک دھرم چھوڑ کر دوسرا دھرم اُتھا لیتے ہیں۔ تبلیغ اور پرچار کے معنی یہی ہیں کہ لوگ ایک دھرم چھوڑ کر دوسرے دھرم کو اُتھا لیں۔ پھر اس بات کا اصلی نتیجہ کیا نکلتا ہے اُسپر غور کیجئے۔ اسکا اصلی نتیجہ یہی نکلتا ہے کہ سب مذہبوں اور دھرموں سے آدمی کی روح بڑی ہے۔ وہی روح ان سب مذہبوں کے بیچ میں تقبیز کرتی ہے۔ کہ کون زیادہ اچھا اور کون کم اچھا۔ کس کو لیٹا چاہئے کس کو چھوڑنا چاہئے۔ سب پوچھیاں۔ وید اور زند اور ستا۔ انجیل اور توریت اور قرآن۔ سب مذہبی رہنما۔ اوتار۔ رشی۔ مہی۔ رسول۔ پیغمبر۔ مسیح۔ نبی۔ سبھی آپ سے درخواست کرتے ہیں کہ مجھکو ماؤں۔ مجھکو ماؤں۔ آپ جسکو چاہتے ہو مانتے ہو۔ نہیں چاہتے تو نہیں مانتے اور الگ ہٹا دیتے ہو۔ اس سے بڑھکر کیا زیادہ صریحی ثبوت۔ چاہئے کہ آدمی کی روح ان سبھوں سے بڑی ہے۔ اسلام۔ مین بہتر اور سناتن دھرم میں ۷۲۰۰ قوت جو پیدا ہوئے ہیں وہ بھی۔ خرابی کرتے۔ ہرئے بھی اسی انسانی روح کی بزرگی بڑوں کے ثبوت ہیں۔ کہ آدمیوں۔

ने ही मनमाना मजहबों की शकल वक्तन् वक्तन् बदल डाला। जैसा सूफियों ने कहा है।

है अपने सीनेमें उससे जायद जो बात वायज किताबमें है।
मसहफि दिल् बों की किताबे बेह अज ई नेस्त।
आत्मैव देवताः सर्वाः सर्वमात्मन्यवस्थितम्।

तो इस रूहको ही पकड़ना चाहिये। इसके बलसे हम सबको चाहिये कि अपने अपने मजहबोंमें, दस्तूरोंमें, राजनीतिमें, जो खराबियां आ गई हैं उनको दूर कर दें। यह मत कहिये कि यह तो धर्म मजहबकी बात है, इसमें बोलनेका काम नहीं। जब आपकी रूहको, आपके “स्व” को, यह ताकत है कि एक मजहबको बिलकुल छोड़ दे और दूसरेको बिलकुल ओढ़ ले, तो क्या यह ताकत नहीं है कि मौजूदा मजहबको जरूरतके मुताबिक घटा बढ़ाकर दुरुस्त कर ले ? और बिना ऐसा घटाये बढ़ाये फिकें और सम्प्रदाय बने कैसे ? यही सब ताकत रखनेवाली रूह असली “स्व” है। हदीसमें इसीलिये कहा है कि जिसने अपनेको पहिचाना उसने खुदाको पहिचाना—“मन् अरफा नफ्सहू फकद् अरफा रब्बहू”। जब इस रूहको, जो खुदाका नूर है, हम लोग पहिचानेंगे तभी मजहबी झगड़े मिटेंगे और मजहबी स्वराज मिलेगा। और तभी राजनीतिक, सियासती, सबे स्व-राजकी भी शकल हम पहिचानेंगे, और तभी वह स्वराज भी हमको मिलेगा। बिना इस सबे “स्व” को, अपनेको, फिरसे पहिचाने, हिन्दुस्तानी कौममें बुजुर्गी वापस नहीं आवेगी। एक महात्मा गांधी, एक हकीम अजमलखां, एक लाला लाजपतराय और एक मौलाना मुहम्मद अली, एक पण्डित मोतीलालजी और एक मौलाना शौकत-अली, एक श्रीयुत चित्तरंजनदास और एक डाक्टर अंसारी,

آپ ہی میں مانا مذہبوں کی شکل دیتا کرتا بدل دیتا ہے۔ جیسا سورجیوں
کے کہا ہے *

ہے اپنے سینے میں اُس سے والد
جو بات واعظ کتاب میں ہے۔

مصطفیٰ دل پہن کہ کتاب ہم ازین نہیں

۵۵ آتشیو دیوتا سورا سورو ساتسہوسکتہم۔ ۹۹

گو اس روح کو ہی پکڑنا چاہئے۔ اس کے بل سے ہم سب کو چاہئے
اپنے اپنے مذہبوں میں۔ دستوروں میں۔ راج ٹیٹی میں۔ جو خرابیاں
آگئی ہیں اُن کو دور کر دیں۔ یہ مت کہئے کہ یہ تو دھرم مذہب کی
جات ہے۔ اس میں بولنے کا کام نہیں۔ جیسے آپ کی روح کو آپ کے ”سو“
کو۔ یہ طاقت ہے کہ ایک مذہب کو بالکل چھوڑ دے اور دوسرے کو بالکل
لے لے کر لے۔ تو کیا یہ طاقت نہیں ہے کہ موجودہ مذہب کو ضرورت کے
مطابق گھٹا بڑھا کر درست کر لے؟ اور بقا ایسا گھٹا بڑھا کر لے اور
سورہائے بنے کیسے؟ یہی سب طاقت رکھنے والی روح اصلی ”سو“ ہے۔
حدیث میں اسی لئے کہا ہے کہ جس نے اپنے کو پہچانا اُس نے خدا
کو پہچانا۔ ”من عرف نفسه فقد عرف ربه“۔ جب اس روح کو جو خدا کا
نور ہے۔ ہم لوگ پہچانیں گے تو ہی مذہبی جھگڑے مٹیں گے۔ اور پہچانیں
سوراج ملیگا۔ اور تبھی راج قیتک۔ سیاستی۔ جیسے سوراج کی بھی
شکل ہم پہچانیں گے۔ اور تبھی وہ سوراج بھی ہم کو ملیگا۔ بقا اس
جیسے ”سو“ کو۔ آپ کو۔ پھر سے پہچانے۔ ہندوستانی قوم میں بڑی واپس
نہیں آویگی۔ ایک مہاتما گاندھی۔ ایک حکیم اجمل خاں۔ ایک لالا
لاجپت رائے اور ایک مولانا محمد علی۔ ایک پنڈت موتی لال جی اور ایک
مولانا شوکت علی۔ ایک شری یات پتھر کیسی داس اور ایک قاضی صاحب۔

एक शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ और एक मौलाना अबुल्कलाम आजादसे, इस बत्तीस करोरके जत्थेका काम नहीं चलेगा। इस भारी गरोहमें सबी रुह डालनेके लिये, चन्दरोजा जोशाजोशी पैदा करनेके लिये नहीं, बल्कि सबी रुहानियत पैदा करनेके लिये, हर एक जिले और हर एक शहर और कस्बेमें हमको ऐसे आदमी चाहियें जो महात्माजीके ठीक ऐसे नहीं तो उनके करीब तो हों। और ऐसे बुजुर्ग तभी होंगे जब सब मजहबोंके असली मुश्तरका उसूलोंकी, अर्थात् समान सिद्धान्तोंकी, तरफ सबका ध्यान दिलाया जायगा। कुरानमें कहा है “कुल तआलौ एला कलेमतिन् सवाइम् बैनता व बैनकुम्”—सब लोग उस एक बातकी तरफ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान् एक है। वेदमें कहा है “संगच्छध्वम् संवदध्वम् सं वो मनांसि जानताम्”—सब लोग साथ साथ चलो, एक राय होकर बोलो, एक बात समझो। सब “स्व” को पहिचानो। यही सबसे ज्यादा जरूरी और पुरअसर अर्थान् प्रभाव शाली उपाय हैं जिससे सब और मजबूत स्वराज हासिल होगा और कायम रहेगा।

॥ ॐ आमी-रमेन् ॥



ایک شکر اچارج بھارتی کرشن تیرتھ اور ایک مولانا ابوالکلام آزاد ہے۔ اس بتیس کروڑ کے جتنے کا کام نہیں چلیگا— اس بھاری گروہ میں سچی روح قائم کرنے کے لئے۔ چند روزہ جوش و خروش پیدا کرنے کے لئے نہیں۔ بلکہ سچی روحانیت پیدا کرنے کے لئے۔ ہر ایک ضلع اور ہر ایک شہر اور تھپہ میں ہم کو ایسے آدمی چاہئیں جو مہاتما جی کے تھیک ایسے نہیں تو ان کے قریب تو ہوں۔ اور ایسے بزرگ تبھی ہونگے جب سب مذہبوں کے اصلی مشترک اصولوں کی۔ ارتھات سمان سدھانتوں کی طرف سب کا دھیان دلایا جاویگا— قرآن میں کہا ہے۔ ”قل تدلوا اِلَی کلمۃ سراء بیننا و بینکم“۔ سب لوگ اُس ایک بات کی طرف آو جو ہمارے اور تمہارے درمیان ایک ہے۔— وید میں کہا ہے۔—

سنگچھدھوم سم وندھوم سم و مناسی جانتام۔

سب لوگ ساتھ ساتھ چلو۔ ایک راے ہو کر بولو۔ ایک بات سمجھو۔— سچے ”سو“ کو پہچانو۔ یہی سب سے زیادہ ضروری اور پُر اثر ارتھات پر بھارتی اُپائے ہے جس سے سچا اور مضبوط سراج حاصل ہوگا اور قائم رہیگا *

माधव विष्णु पराङ्करने ज्ञानमण्डल यंत्रालय, काशा में मुद्रितकर
ज्ञानमण्डल कार्यालयके लिये प्रकाशित किया ।
